प्रतिभा

2022-2023

हिंदी साहित्य सभा

सेंट अलॉयसियस स्वशासी महाविद्यालय

Reaccredited 'A+' by NAAC (CGPA 3.68/4.00)
College with Potential for Excellence by UGC
DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT Jabalpur, Madhya Pradesh, India

हिन्दी साहित्य सभा कार्यकारिणी परिचय

अध्यक्ष	:	रागिनी नापित
उपाध्यक्ष	:	अनुष्का मिश्रा
सचिव	:	वंशिका जैन
कोषाध्यक्ष	:	नेहा कुशवाहा
सह सचिव	:	स्वेच्छा द्विवेदी
कार्यकारिणी	:	गंगा चौकसे, कौतुकी उपाध्याय, मानशी राय अंजली रघुवंशी

हिन्दी साहित्य सभा
प्रतिभा

अंक : 2022–2023

संरक्षक
डॉ.फा. वलन अरासू
प्राचार्य

संपादक
डॉ. रामेन्द्र प्रसाद ओझा
प्रभारी आचार्य

सहायक संपादक
डॉ. रीना थॉमस

छात्र संपादक
श्रेया पटेल
प्रबल राय

अनुक्रमणिका

रचनाएँ

- कवर पेज - प्रतीक खन्ना
- परिवेश देखो वेश नहीं - मानसी राय
- वे मुझे पहचान गई - मानसी राय
- पर्यावरण संरक्षण - अल्पिता अवस्थी
- इंटरनेट आज की आवश्यकता - ख़ुशी चौकसी
- जल संरक्षण - आर्या अग्रवाल
- सपने बुनना सीखो - कृष्णा केवट
- हिंदी – हिंदू – हिंदुस्तान - वैष्णवी मोंगरे
- भारतीय समाज में नारी का स्थान – मयंक द्विवेदी
- हिंदी दिवस - शुभम कुशवाहा
- भगवान महावीर स्वामी - सचिन करसा
- पापा का गुड्डा - कशिश मनोचा
- माँ की ममता - सौम्या पटेल
- एक हिंदी काव्य संग्रह - वर्षा श्रीपाल
- भारत में बेरोजगारी की समस्या - चुकेंद्र मरावी
- हिंदी की कविता - संकलित
- हिंदी भाषा - कृष्णा नामदेव
- बुद्धि का महत्त्व - चंचल गौतम
- दो मुक्तक - धननंजय चौरसिया
- पांव और पंख - माधवी बनवार
- माँ अच्छी नहीं - विर्जोत सिंह
- रास्ते(फतेहपुर सीकरी) - देव मौर्य
- इंटरनेट आज की आवश्यकता - आकांशा कवार्थी
- साहित्य का उद्देश्य - पूनम धुर्वे
- संविधान का निर्माण - स्वेता चौहान
- मेरी उलझन - नेहा कुशवाहा
- हाथ पर आसमान - अनुष्का मिश्र
- समाज में नारी का स्थान - पूजा नेताम
- धन से बड़ा स्वास्थ्य - विट्टू कुमार

- प्रकृति पर विजय - रागिनी नापित
- कर्म क्या है? - श्रेया पटेल
- रूठना – मनाना - वंशिका जैन
- विनम्रता - प्रबल राय
- महादेवी वर्मा - कौतकी उपाध्याय
- समय बहुत ही मूल्यवान है - रोहित कुमार
- देश की बोली - निहारिका जाटव
- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस - सौम्या पटेल
- शिक्षक - शिवांशु अहिरवार
- योग्यता का पैमाना - विक्रांत सिंह धुर्व
- हमेशा सीखते रहें - विशाल सिंह धुर्वे

संपादकीय

"भारत के जन-जन के मन में बस इतनी अभिलाषा हो,
हर भाषा सम्मानित हो पर हिन्दी ही जन भाषा हो।"

भाषाएँ तो हम कई सीख लेते हैं परन्तु जो लगाव हमारा अपनी मातृभाषा से होता है, वह और किसी से नहीं। जो सरलता या विचारों को मौखिक रूप से दर्शाने में जो आसानी हमें अपनी मातृभाषा में होती है वह किसी और भाषा में नहीं। इसीलिए हमें अपनी मातृभाषा से परस्पर जुड़े रहना चाहिए।

हिन्दी विभाग के अंतर्गत हर साल प्रकाशित होने वाली हिन्दी साहित्य सभा की पत्रिका के माध्यम से हमने लोगों को अपनी मातृभाषा से जोड़े रखने का प्रयास किया है।

इस पत्रिका में हिन्दी साहित्य सभा के सदस्य छात्र-छात्रों ने अपनी लेखन शैली का प्रदर्शन किया है और यह दर्शाया है कि आज का युवा भी अपनी मातृभाषा के प्रति सजग और उसकी बेहतरी के लिए सदैव कार्यरत है।

पत्रिका के माध्यम से छात्रों के विचारों तथा कलाओं का सही रूप देखने मिलता है, तथा उनके कौशल तथा लेखन शैली का विकास होता है। विचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का सबसे शक्तिशाली माध्यम भाषा ही है। भाषा के कारण ही हम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं और इसका श्रेय ज्ञान और संस्कृति को जाता है।

इस पत्रिका में लेखन के विभिन्न रूपों की रचनाओं का संग्रह है। आशा करते हैं कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रति आपकी रूचि को और बढ़ाएगी तथा जन चेतना का संचार करेगी।

श्रेया पटेल
छात्र संपादक

परिवेश देखो वेश नहीं

मानशी राय
बी.ए. प्रथम वर्ष

मेरा एक प्रश्न है आपसे कि क्या वेश देखकर हम किसी के परिवेश की पहचान कर सकते हैं? आप में से कुछ यथार्थवादियों का कहना होगा कि इसी वेश से तो पहचान होती है। दूर दराज के लोगों के वस्त्र देखकर हम बता सकते हैं कि वे कहाँ रहते हैं, कैसी वाणी बोलते है, कैसे व्यंजनों का खान-पान करते हैं। परंतु फिर भी इससे मुझे इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता कि क्या परिवेश की पहचान वेश देखकर होती है या इसे समझने के कई और साधन भी हैं?

वेश तो बाहरी आवरण है जो प्रतिदिन लोग अपनी-अपनी सुविधा अनुसार बदलते हैं। परंतु परिवेश का क्या? वह तो दिन-प्रतिदिन नहीं बदलता। और बदले भी कैसे? इसे बनाने में इतने दिन का परिश्रम भी तो लगा है। छोडिए ये सब, आइए मैं अब मुद्दे में आती हूँ। इन सब बातों से मैं बस इतना ही कहना चाहती हूँ कि क्या समाज और किसी व्यक्ति के लिए वेश ही महत्वपूर्ण है अथवा परिवेश भी इसमें कोई भूमिका निभाता है? पता नहीं ये प्रश्न मेरे मन में क्यों उठे। इसके कई कारण हैं। हो सकता है कि आज की यह बदलती यह युवा पीढ़ी, देश एवं बाहरी आवरण के द्वारा बढ़ता भेदभाव या कृत्रिम सुंदरता से बनते-बिगड़ते रिश्ते मेरे मन में घर करते जा रहे हैं। बात तो यह भी नहीं है, बस एक घटना है जिस पर मुझे आश्चर्य सा होता है कि क्या भला ऐसा भी हो सकता है?

दरअसल हुआ यूँ कि मैं किसी काम के सिलसिले में पिताजी के साथ अमोल खोह नामक एक धार्मिक स्थल पर गई थी। शिवरात्रि का समय था अतः सभी जगह बहुत भीड़ थी। ऐसे में मुझे एक महिला दिखी जो मुझे यहाँ की नहीं लग रही थी। उनका रंग, रूप, आदि देखकर मुझे लगा कि वह किसी दूसरे देश (अमेरिका) आदि से यहां घूमने आई है। मैंने उनसे उनका नाम अंग्रेजी में पूछा तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। मुझे लगा उन्हें सुनाई नहीं दिया होगा अतः मैंने उनसे दोबारा बोला "हॅलो वैलकम टू इंडिया।" वे उत्तर नहीं दे रही थी तो मैंने धीरे से अपने मुँह में धीरे से फुसफुसाई कि इन्हें तो अंग्रेजी ही नहीं आती तो अमेरिका जैसे देश में यह लोगों से बात कैसे करती होगी। मेरी बात खत्म हुई ही थी कि वह बोल उठी कि माफ़ कीजिएगा। आप कब से मुझसे बात कर रही है लेकिन मैं उत्तर नहीं दे रही थी। ऐसा नहीं है कि मुझे अंग्रेजी नहीं आती परंतु मैं अभी भारत में हूँ अमेरिका में नहीं, अतः

अभी मैं हिंदी में बात करने में ज्यादा सहज महसूस कर रही हूँ। अंग्रेजी मेरी मातृभाषा है, परंतु भारत में आकर मुझे हिंदी ही सर्वप्रिय हो गई है। मेरा नाम केरी है। मुझे भ्रमण करने का शौक है और भारत की संस्कृति की सुंदरता को देखते हुए मैंने इसे भ्रमण करने का निश्चय किया है ताकि मैं यहाँ की सभ्यता और संस्कृति को गहनता से जान सकूँ"। उनकी सोच पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि अमेरिकी होकर भी उनके मन में भारत और हिंदी के प्रति कितना सम्मान है। उन्होंने तो मुझे ग्रामीण परिवेश की भाषा भी बोलकर दिखाई जिससे पता चलता है कि कितनी उत्सुकता है उनके मन में, भारतीय संस्कृति को जानते और समझने के लिए।

यही हो रहा है आजकल। जहाँ हम दर्शनार्थियों को अमेरिकी, गोरे, विदेशी, अफ्रीकी आदि कहकर संबोधित करते हैं, वहीं वे लोग हमें भारतीय कहकर संबोधित करते हैं। हमने यह संबोधन उन्हें उनकी वेश-भूषा के कारण दिया है परंतु उन्होंने हमें हमारा संबोधन हमारी संस्कृति के आधार पर दिया है वेश-भूषा देख कर नहीं। इसलिए आज भी मेरे लिए दर्शनार्थी 'परिवेश' की धारणा को बदलने वाले अहम लोग होंगे। जिनके लिए परिवेश मायने रखता है वेश नहीं।

वे मुझे पहचान गई

मानशी राय
बी.ए.प्रथम वर्ष

पहचान। छोटा सा शब्द है न, पर इसके भी कई आंतरिक पहलू है। यह केवल प्रतिष्ठा के द्वारा बैठाया गया एक तालमेल ही नहीं अपितु सहृदय में बैठाई गई अनुभूति भी है। आपकी भी कई लोगों से पहचान होगी। जैसे उच्चे घरानों के लोगों से, सरकारी दफ्तरियों से या अन्य किसी प्रतिष्ठित से। परंतु क्या यह पहचान केवल औपचारिक संवंधों की घोतक है या यह किसी मौन या सहज ही गुप्त एवं शांत रूप से उत्पन्न हुई एक भावना भी है? पहले मुझे भी पहचान औपचारिक संबंधों का प्रतीक लगती थी पर कहते हैं न कि परिभाषाओं और प्रतीकों को बदलते देर नहीं लगती। मेरे साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ। यह वह घटना थी जिसने बिल्कुल ही मौन एवं शांत तरीके से मेरी भावनाओं के साथ एक ऐसा तालमेल बैठा लिया कि मैं इसे व्यक्त करने को मजबूर सी हो गई।

परीक्षा जीवन की वह कड़ी है जिसमें सब अपनी जीवन के लक्ष्यों एवं उपाधियों पर खरे उतरना चाहते हैं। परंतु यह कड़ी तब और भी महत्वपूर्ण बन जाती है जब इसमें एक पहचान सहज ही छिपी हो। अब आप सोचेंगे की भला पहचान और परीक्षा में क्या संबंध है। ये दोनों तो हमें अलग-अलग विचारधाराओं की प्रतीक लगती हैं। अगर हम इसका अनुभव मेरे दृष्टिकोण से करें तो यह आपको संबंधित लगेगी। परीक्षा का संबंध पहचान से तो नहीं परंतु उस पहचान से उभरे हुए आत्मविश्वास से तो जरूर है।

मेरी दसवीं बोर्ड की परीक्षा का पहला दिन था। मन में थोड़ा डर, थोडा उत्साह और थोड़ी चिंता थी, जो मेरे चेहर कर साफ़ झलक रही थी। घर में सभी को मेरी परीक्षा बारे में मालूम था अतः उत्साह के साथ सभी ने मुझे मेरी परीक्षा के लिए शुभकामनाएँ दी। शुभकामनाएँ तो थी, पर वैसी नहीं जैसी मैं चाहती थी!

मै और मेरे पिताजी विद्यालय के लिए रवाना हुए। उन्होंने मुझसे ढेर सारी बातें की परंतु मेरा ध्यान आकर्षित न कर पाए। जब हम विद्यालय पहुँचे तब हमने देखा कि वहाँ बच्चों का तांता लगा हुआ है। अभिभावक गण अपने बच्चों से अलग - अलग ढंग से वार्तालाप कर रहे थे। किसी का कहना था कि बेटा तुम्हारे 90 प्रतिशत से ज्यादा ही आने चाहिए। वरना अच्छा न होगा, तो कुछ का कहना यह भी था कि भले ही हिंदी या अंग्रेजी में अंक कम हो जाए लेकिन विज्ञान और गणित में अंक कम नहीं होने चाहिए। वरना तुम साइंस स्ट्रीम नहीं ले पाओगे। और बच्चों के जवाब भी कुछ इस कदर बुलंद थे मानो वे किसी युद्ध में भाग लेने जा रहे हैं। जहाँ परीक्षा इनकी सेना, कलम उनका शस्त्र, प्रश्न पत्र युद्ध का सेनापति तथा परीक्षा के परिणाम राजा के रूप में प्रतीत हो रहे थे। मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा था कि, आज यहाँ होने क्या वाला है? उस समय शिक्षकों के हाव-भाव भी कुछ ऐसे थे मानो वो खुद को राजा की आवाम के रूप में समझ रहे थे। यदि विद्रोही सेना परास्त हुई तब तो वे सुरक्षित अपने राज्य (विद्यालय) जा सकते है अन्यथा इनका राज्य तो हाथ से गया। जो कुछ भी हो अभी भी मेरे मन में किसी बात को लेकर असंतोष का भाव था।

घंटी वजती है। बच्चों की एक भीड़ मुख्य द्वार की तरफ आती है। उन्हें देखकर मैंने भाँप लिया था कि युद्ध प्रारंभ हो चुका है। बच्चे भी अपने अस्त्र-शास्त्र लेकर तैयार। वस कमी है तो उस प्रारंभिक रणभेरी की जो एक नूतन विद्रोह का आग्रह करे। वो समय भी आ ही गया। एक प्रश्न अभी भी था कि मैंने तो अभी अपनी सेना का चुनाव ही नहीं किया कि मैं किस ओर से हूँ। यहाँ तीन दल थे । दल अ (विजय) यह वे लोग थे जिनके मन में युद्ध जीतने का भाव तो था ही, पर साथ ही वे राज्य की संपत्ति आदि

भी रखना चाहते थे। ("मै उन छात्रों की बात कर रही हूँ जिनका उद्देश्य 90% से ज्यादा अंक लाने का है और इन्हें राज्य की संपति के रूप में मान-प्रतिष्ठा तथा माता-पिता या अन्य के द्वारा दिया गया उपहार चाहिए।)

दूसरा दल था- दल ब(समझौता)। इस दल के मन में केवल युद्ध जीतने का भाव था (यह दल उन छात्रों का द्योतक है जिन्हें केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होना है)। और तीसरा दल तो सबसे होनहार एवं प्रसन्न रहनेवालो का था। दल स (अंधभक्त/आज्ञापालक) इस दल को युद्ध हारने या जीतने से कोई मतलब नहीं था। इनका मकसद केवल अपने माता-पिता की आज्ञानुसार युद्ध लड़ना (परीक्षा में बैठना) था।

"मैंने बहुत सोचा, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँची कि मैं इन तीनों में से किसी भी दल में नहीं रहूंगी और स्वच्छंद होकर ही इस परीक्षा बनाम युद्ध में अपनी वीरता का प्रदर्शन दूंगी।

मुख्यद्वार पर नियमानुसार बच्चों की जाँच होती है कि ताकि कोई बच्चा गैरकानूनी शस्त्र (चिट्ठा, परचा, जुगाड) आदि इस युद्ध भूमि (परीक्षा भवन) में न ले आए। जाहिर है कि पिछले जमाने के युद्धों में गैरकानूनी शस्त्र नाम की कोई वस्तु नहीं होती थी। परन्तु वर्तमान युग में इस युद्ध में ये सब ले जाना वर्जित है । जांच हो रही थी और अगला नंबर मेरा ही था। मैं वहां गई और देखा कि वहां की जांचकर्ता ने मुझे देखकर एक ऐसी मुस्कान दी जिसे मैं समझ न पाई। मुझे याद आया कि कुछ समय पहले मैंने अपने आप को अचेत पाया था और तब मैंने ऐसा महसूस किया कि कोई मुझे घूर रहा था। मै भूत से वर्तमान में वापस आई। जांचकर्ता ने मेरा शास्त्रागार (कम्पोक्स बॉक्स) देखा उसे और इसे केवल स्पर्श मात्र करके वापस कर दिया। उन्होंने अंदर की सामग्री तक नहीं निकाली कि मैंने उसमें क्या रखा है। उन्होंने मेरा युद्धसंदेश (प्रवेश पत्र) की भी जांच की परंतु केवल मेरा नाम जानने के लिए। पहले तो मुझे कुछ असहज सा लगा। फिर जब उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा तो मेरी सारी शंकाएँ दूर हो गई।

मैंने परीक्षा लिखी और घंटी बजते ही घर वापस आ गई। यह सिलसिला रोज़ चलता रहा । सबके सामने मुझे कुछ नहीं कहती थी पर जब भी मैं पानी पीने के बहाने निकलती या फिर पिताजी की प्रतीक्षा करती तब वे मुझसे पूछा करती कि परीक्षा कैसी हुई। उस वक्त मैं यूं ही कह देती कि अच्छी गई पर वे समझ जाती और कहती कि अभी थोड़ी कसर है और मेहनत करो। मैं घर आकर उनके बारे मे सोचती रहती कि

भला वो कौन हैं और मुझे ही इतनी ज्यादा सलाह-मशवरा क्यों दे रही हैं? मैं सोचती रहती, पर कभी उन्हें उनकी सलाह या प्रश्न के लिए मना न करती।

आखिर वो दिन आ ही गया जब हमारी अंतिम परीक्षा होने वाली थी। जाँच करते वक्त उन्होंने बोला कि अंतिम परीक्षा है। कैसा महसूस कर रही हो ? मैंने बोला कि वहुत अच्छा। मैंने इतना कहा ही था कि उन्होंने मुझे अंदर भेज दिया। परीक्षा हुई, वाहर निकलते वक्त मेरे मन में एक प्रसन्नता थी कि मैं युद्ध में न होकर भी युद्ध में उपस्थित थी। पिताजी आ चुके थे। मुझे घर जाना था अतः मैं उन मैडम को ही ढूंढ रही थी। वहुत ढूँढने पर अखिरकार वो मुझे मिल ही गई। उनकी उजली साड़ी, माथे पर लाल विंदी तथा उनकी वह निश्छल मुस्कान उनके व्यक्तित्व को भली-भाँति सुशोभित कर रही थी। मैं उनके पास गई और उनके द्वारा दिए गए मनोबल के लिए धन्यवाद वोला। वो मुस्कुराई और मुझे बोली कि 'अपना ध्यान रखना'। वह शब्द सुनकर मुझे ऐसा लगा मानो वह कह रही हों कि तुम जीत गई। वह शब्द एवं शिक्षिका आज भी मुझे याद है।

वे बाकी आवाम (शिक्षको) से कुछ अलग ही थी। उन्हें हार या जीत से कोई मतलब नहीं था उन्हें मतलब था तो सिर्फ मुझसे। मेरे युद्ध जीतने के प्रयासों से, मेरे मनोबल तथा मेरी प्रसन्नता से। सच, वे मुझे पहचान गई। अतः यह मेरी एक निष्पक्ष राजा की जीत थी उस परीक्षा बनाम युद्ध में।

पर्यावरण संरक्षण

अलपिता अवस्थी
बी.ए. प्रथम वर्ष

पर्यावरण हमारे अस्तित्व और पृथ्वी के अस्तित्व का आधार है। पर्यावरण हमारे आस पास के प्राकृतिक परिवेश का कुलयोग है। पर्यावरण संरक्षण इस प्रकार मानव और मानव निर्मित गतिविधियों के गंभीर प्रभाव से पर्यावरण की सुरक्षा और बचत को संदर्भित करता है। पृथ्वी की सतह पर मौजूद जीवन रूप के संरक्षण और अस्तित्व में पर्यावरण सव से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यावरण से ही हमें विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों जैसे भूमि, जल और वायु का लाभ मिलता है। इसे हर कीमत पर संरक्षित करने की आवश्यकता है। पर्यावरणीय क्षति ग्लोबल वार्मिंग, सूखा, बाढ़ आदि संकटों के लक्षण हैं। पर्यावरण संरक्षण का मामला अत्यंत आवश्यक है क्योंकि पर्यावरण इस

समय सबसे अधिक खतरे में है। विभिन्न मानव निर्मित गतिविधियों के कारण, स्थिति गंभीर खतरे में है। पर्यावरण में इसके तहत स्थल मंडल, वायुमंडल, जीवमंडल और जलमंडल शामिल है। वायुमंडल में हमारे चारों ओर सभी गैसीय तरल पदार्थ होते हैं। पर्यावरण के बिगड़ने का प्रमुख कारण भूमि, जल और वायु का प्रदूषण है।

"पर्यावरण है तो जीवन में सौंदर्य है"

इंटरनेट आज की आवश्यकता

खुशी चौकसे
बी.ए. प्रथम वर्ष

इंटरनेट किसी भी व्यक्ति की दुनिया के किसी भी कोने में बैठे हुए महत्वपूर्ण जानकारियाँ -प्रदान करने की अद्भुत सुविधा प्रदान करता है। इसके माध्यम से हम लोग आसानी से किसी एक जगह रखे कम्प्यूटर को किसी भी एक या एक से अधिक कम्प्यूटरों से जोड़कर जानकारी का आदान-प्रदान कर सकते हैं। जैसे ही हम अपने इंटरनेट सेवा प्रदाता को इसके कनेक्शन के लिये पैसे देते हैं उसी समय से हम इसका प्रयोग दुनिया के किसी भी कोने से एक हफ्ते या उससे ज्यादा समय के लिए कर सकते हैं। इंटरनेट आप में कोई आविष्कार नहीं है इंटरनेट टेलीफोन, कंप्यूटर, दूसरी तकनीक को इस्तेमाल करके बनाई बनाई गई एक ऐसी प्रणाली है जिसमें सूचना व तकनीक का साझा उपयोग किया जा सकता है तो चलिए जानते है कि इंटरनेट आज हमारी आवश्यकता बन गया है। बिना इंटरनेट के आज के समय में हम कुछ नहीं ढूंढ सकते । सही मायनों में इंटरनेट एक-दूसरे से जुड़े बहुत सारे कम्प्यूटरों का जाल है।

जलसंरक्षण

आर्या अग्रवाल
बी.ए.प्रथमवर्ष

आज जिस प्रकार से पानी दूषित हो रहा है वह एक बहुत ही ज्यादा चिंता का विषय है क्योंकि जल हर इंसान को जीवित रहने के लिए आवश्यक होता है। यदि इस तरफ ध्यान ना दिया गया तो धीरे-धीरे पानी के सभी स्रोत खत्म हो जाएंगे जिसके कारण लोगों को स्वच्छ पानी पीने के लिए उपलब्ध नहीं हो सकेगा। इसलिए सभी

मनुष्य को चाहिए कि वह जल संरक्षण के उपायों की तरफ ध्यान दें जिससे कि पानी को सुरक्षित किया जा सके।

जल संरक्षण एक ऐसा तरीका है जिसके माध्यम से जल को संरक्षित करते हैं ताकि आने वाले समय के लिए पानी उपलब्ध हो सके। इसके लिए सबसे अच्छा तरीका है कि पानी का उपयोग एक सीमित मात्रा के अंदर ही करना चाहिए। यदि पानी का इस्तेमाल जरूरत से ज्यादा किया जाएगा तो उसकी वजह से पानी की बहुत ज्यादा कमी हो जाएगी। हमारा भारत भी एक ऐसा देश है जहाँ पर जल की कमी की समस्या बहुत तेजी के साथ बढ़ रही है। जिसके कारण लोगों को स्वच्छ जल पीने के लिए नहीं मिल पा रहा है। यह जरूरी है कि जल को स्टोर करके रखा जाए ताकि भविष्य में उसका इस्तेमाल किया जा सके।

जल संरक्षण की आवश्यकता इसलिए जरूरी है क्योंकि अगर इसी तेजी के साथ पानी नष्ट किया जाता रहा तो एक दिन पूरी पृथ्वी पर पानी की बहुत ज्यादा किल्लत हो जाएगी। जब पृथ्वी पर पीने लायक पानी नहीं रहेगा तो ऐसे में सभी प्राणियों का जीवन खतरे में पड़ सकता है। ऐसे में अगर जल संरक्षण किया जाए तो उससे पीने लायक पानी आने वाले समय के लिए सुरक्षित करके रखा जा सकता है।

सपने बुनना सीखलो

कृष्णा केवट
बी.ए. प्रथम वर्ष

बैठ जाओ सपनों के नाव में,
मौके की ना तलाश करो,
सपने बुनना सीख लो।

खुद ही थाम लो हाथों में पतवार,
माझी का ना इंतजार करो,
सपने बुनना सीख लो।

पलट सकती है नाव की तकदीर,
गोते खाना सीख लो,
सपने बुनना सीख लो।

अब नदी के साथ बहना सीख लो,
डूबना नहीं, तैरना सीख लो,
सपने बुनना सीख लो।

भंवर में फंसी सपनों की नाव,
अब पतवार चलाना सीख लो,
सपने बुनना सीख लो।

खुद ही राह बनाना सीख लो,
अपने दम पर कुछ करना सीख लो,
सपने बुनना सीख लो।

तेज नहीं तो धीरे चलना सीख लो,
भय के भ्रम से लड़ना सीख लो,
सपने बुनना सीख लो।

हिन्दी-हिन्दु-हिन्दुस्तान

वैष्णवी मोंगरे
बी.ए. प्रथम वर्ष

हिन्दी -हिन्दू -हिन्दुस्तान, कहते हैं सब सीना तान,
पल भर के लिये जरा सोचे इन्सान
रख पाते हैं हम इसका कितना ध्यान,
सिर्फ 14 सितम्बर को ही करते हैं
अपनी राष्ट्र भाषा का सम्मान
हर पल, हर दिन करते हैं हम
हिन्दी बोलने वालों का अपमान,
14 सितम्बर को ही क्यों
याद आता है बस हिन्दी बचाओ अभियान
क्यों भूल जाते हैं हम,
हिन्दी को अपमानित करते हैं, खुद हिन्दुस्तानी हम
क्यों बस 14 सितम्बर को ही हिन्दी में
भाषण देते हैं हमारे नेता महान
क्यों समझते है अपना हिन्दी बोलने में अपमान,"

क्यों समझते है सब, अंग्रेजी बोलने में खुद को महान
भूल गये हम क्यों इसी अंग्रेजी ने, बनाया था हमें वर्षो पहले गुलाम
आज उन्हीं की भाषा को क्यों करते है, हम शत-शत प्रणाम
अरे ओ! खोये हुये भारतीय इंसान,
अब तो जगाओ अपना सोया हुआ स्वाभिमान,
उठे खड़े हो करें मिलकर प्रयास हम
दिलाये अपनी मातृभाषा को हम
अन्तराष्ट्रीय पहचान ताकि कहे फिर से हम
हिन्दी- हिन्दू - हिन्दुस्तान,
कहे, सब सीना तान।

भारतीय समाज में नारी का स्थान

मयंक द्विवेदी
बी.ए. प्रथम वर्ष

आधुनिक नारी जीर्ण-शीर्ण मान्यताओं एवं गुलामी की जंजीरों को भिन्न-भिन्न करके उन्नति की दौड़ में पुरुष के साथ कदम मिलाकर प्रतिपल दौड़ रहीहै।उच्च शिक्षा कार्यालयों, विश्वविद्यालयों, रक्षा और वैज्ञानिक क्षेत्र में सक्रिय सहयोग करके महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहीं हैं। साहित्यिक एवं वैज्ञानिक विषयक पुस्तकों की भी रचना कर रही हैं। उनके दिशा निर्देशन के फलस्वरूप शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। नारी के अभाव में मानवता की कल्पना करना आकाश कुसुम के समान है। वह जननी, बेटी, पत्नी, देवी एवं प्रेयसी आदि रूपों से विभूषित है। नारी के बिना मानव अपूर्ण है, मानव पर उसका अमूल्य उपकार है। वह पुरुष की सहभागिनी है, जीवनसंगिनी है।

(i). प्राचीनकाल में नारी:-वैदिककाल में नारी का महत्वपूर्ण स्थान था।आध्यात्मिक, एवं धार्मिक क्षेत्र में भी नारी की भूमिका अग्रणी थी। सीता, अनुसुइया, गार्गी, सावित्री और सुलभा इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। इनके नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखे गए हैं।

ii). मध्ययुग में नारी :- मध्यकाल में नारी के प्राचीन आदर्श यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते " को झुठलाकर भोग एवं विलासिता का साधन बना दिया गया। उसका स्वयं का अस्तित्व घर की चारदीवारी में सन्तान्नोपत्ति करने में ही सिमट कर रह गया। इस समय पुरुष समाज द्वारा उसे धन के समान भोग की वस्तु समझा जाता था। पुरूष समाज उसके धन को और माता-पिता के द्वारा दिए गए धन को वह अपनी वस्तु समझने लगा।

(iii) वर्तमान युग में नारी:- राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना जागृत होने के कारण वर्तमान में नारी की दशा में आशातीत सुधार हुआ है। राजा राममोहन राय और दयानन्द सरस्वती ने नारी

को पुरुष के समकक्ष होने के अधिकार से सुसम्पन्न कराया, शिक्षा के द्वार खोले। आज नारी उनमुक्त होकर पुरुष के साथ कदम मिलाकर उन्नति की मंजिल की ओर अग्रसर है। इन्दिरा गॉधी, कमला नेहरू, कल्पना चावला आदि इनके उनमुक्त उदाहरण हैं।

पाश्चात्य प्रभाव :-

पाश्चात्य प्रभाव के फलस्वरूप आज भारतीय नारी अपने प्राचीन आदर्शों और मान्यताओं को तिलान्जलि दे रही हैं। भोग-विलास, मौज-मस्ती, और "खाओ पियो मौज करो " के पथ का अनुगमन कर रही है। करुणा, ममता, कोमलता और स्नेह को त्यागकर अपनी छवि को धूमिल कर रही हैं। आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र होने की वजह से आज नारी विलासिता की ओर उन्मुख है।

" पहले युग में नारी को देवी सा पूजा जाता था।
फिर उसको पददलित मानकर घर में ही रौंदा जाता था।
नवजागरण का युग आया, नारी का सम्मान वढ़ा,
अपने बल पौरुष पर उसको फिर ऊँचा स्थान मिला ||

निष्कर्षत: इस बात की परम आवश्यकता है कि, भारतीय नारी को वर्तमान परिपेक्ष्य में पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करके मान्यताओं को स्वीकार करना चाहिए, ऐसा होने पर वह एक ऐसा स्थान प्राप्तकर सकेगी, जो देवों के लिए भी दुर्लभ है।

हिन्दी दिवस

शुभम कुशवाहा

हिन्दी दिवस प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है। 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया कि हिन्दी केन्द्र सरकार की आधिकारिक भाषा होगी। क्योंकि भारत मे अधिकतर क्षेत्रों में ज्यादातर हिन्दी भाषा बोली जाती थी इसलिए हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया और इसी निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को प्रत्येक क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये वर्ष 1953 से पूरे भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविन्ददास आदि साहित्यकारों को साथ लेकर राजेन्द्र सिंह ने अथक प्रयास किये।

हिन्दी दिवस के दौरान कई कार्यक्रम होते हैं। इस दिन छात्र-छात्राओं को हिन्दी के प्रति सम्मान और दैनिक व्यवहार में हिन्दी के उपयोग करने आदि की शिक्षा दी जाती है। जिसमें हिन्दी निबन्ध लेखन, वाद-विवाद, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आदि होता है। हिन्दी दिवस पर हिन्दी के प्रति लोगों को प्रेरित करने हेतु भाषा सम्मान की शुरुआत की गई है। यह सम्मान प्रतिवर्ष देश के ऐसे व्यक्तित्व को दिया जाएगा जिसने

जन-जन में हिन्दी भाषा के प्रयोग एवं उत्थान के लिए विशेष योगदान दिया है। इसके लिए सम्मान स्वरूप एक लाख एक हजार रुपये दिये जाते हैं। हिन्दी में निबन्ध लेखन प्रतियोगिता के द्वारा कई जगह पर हिन्दी भाषा के विकास और विस्तार हेतु कई सुझाव भी पास किए जाते हैं। लेकिन अगले दिन सभी हिन्दी भाषा को भूल जाते हैं।हिन्दी भाषा को कुछ और दिन याद रखें इस कारण राष्ट्रभाषा सप्ताह का भी आयोजन होता है। जिससे यह कम से कम वर्ष में एक सप्ताह के लिए तो रहती ही है।

इसका मुख्य उद्देश्य वर्ष में एक दिन इस बात से लोगों के समक्ष रखना है कि जब तक वे हिन्दी का उपयोग पूर्ण रूप से नहीं करेंगे तब तक हिन्दी भाषा का विकास नहीं हो सकता है। इस एक दिन सभी सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। इसके अतिरिक्त जो वर्ष भर हिन्दी में अच्छे विकास कार्य करता है और अपने कार्य में हिन्दी का अच्छी तरह से उपयोग करता है, उसे पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया जाता है।

हिन्दी सप्ताह 14 सितम्बर से एक सप्ताह के लिए मनाया जाता है। इस पूरे सप्ताह अलग-अलग प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। यह आयोजन विद्यालय और कार्यालय दोनों में किया जाता है। इसका मूल उद्देश्य हिन्दी भाषा के लिए विकास की भावना को लोगों में केवल हिन्दी दिवस तक ही सीमित न कर उसे और अधिक बढ़ाना है। इन सात दिनों में लोगों को निबन्ध लेखन, आदि के द्वारा हिन्दी भाषा के विकास और उसके उपयोग के लाभ और न उपयोग करने पर हानि के बारे में समझाया जाता है।

हिन्दी दिवस पर हिन्दी के प्रति लोगों को उत्साहित करने हेतु पुरस्कार समारोह भी आयोजित किया जाता है। जिसमें कार्य के दौरान अच्छी हिन्दी का उपयोग करने वाले को यह पुरस्कार दिया जाता है। यह पहले राजनेताओं के नाम पर था, जिसे बाद में बदल कर राष्ट्रभाषा कीर्ति पुरस्कार और राष्ट्रभाषा गौरव पुरस्कार कर दिया गया। राष्ट्रभाषा गौरव पुरस्कार लोगों को दिया जाता है जबकि राष्ट्रभाषा कीर्ति पुरस्कार किसी विभाग, समिति आदि को दिया जाता है।

कई हिन्दी लेखकों और हिन्दी भाषा जानने वालों का कहना है कि हिन्दी दिवस केवल सरकारी कार्य की तरह है, जिसे केवल एक दिन के लिए मना दिया जाता है। इससे हिन्दी भाषा का कोई भी विकास नहीं होता है, बल्कि इससे हिन्दी भाषा को हानि होती है। कई लोग हिन्दी दिवस समारोह में भी अंग्रेजी भाषा में लिख कर लोगों का स्वागत करते हैं। सरकार इसे केवल यह दिखाने के लिए चलाती है कि वह हिन्दी भाषा के विकास हेतु कार्य कर रही है। स्वयं सरकारी कर्मचारी भी हिन्दी के स्थान पर अंग्रेज़ी में कार्य करते नज़र आते हैं।

भगवान महावीर स्वामी

सचिन करसा
बी.ए.द्वितीय वर्ष

धर्म प्रधान धरा भारत पर अनेकानेक धर्म प्रवर्तकों ने जन्मलिया है। भगवान श्री कृष्ण की इस सूक्ति को चरितार्थ करने वाले इन धर्म-प्रवर्तकों को भगवान की संज्ञा देना कोई अत्युक्ति नहीं होगी। श्री कृष्ण के कहे गए वचनों के आधार पर ये महात्मा ईश्वरीय अवतार से किसी अर्थ में कम सिद्ध नहीं होते हैं-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥४-७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे

अर्थात जव-जव धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तव-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात प्रकट होता है। साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।

धर्म की संस्थापना करने वाले तथा सज्जन व्यक्तियों की रक्षा के लिये और दुष्टों से वचने का मार्ग दिखाने वाले भगवद स्वरूप महावीर स्वामी जी का जन्म 'उस समय हुआ जव यज्ञों का महत्त्व वढने के कारण केवल ब्राह्मणों की ही प्रतिष्ठा समाज में लगातार वढ़ती जा रही थी। पशुओं की वलि देने से यज्ञ विधान महंगे हो रहे थे। इससे उस समय का जन समान मन ही मन पीड़ित और तंग था। कुछ समय वाद तो समाज में यह भी असर पड़ने लगा कि धर्म आडम्वर वनकर सभी ब्राहम्णोंत्तर जातियों को दवा रहा है । ब्राहम्ण जाति गर्वित होकर अजातियों को पीड़ित करने लगी। इसी समय देवी कृपा से महावीर स्वामी धर्म के सच्चे स्वरूप को समझाने के लिए और परस्पर भेद भाव के गहराई को माने के लिए सत्य स्वरूप में इस पावन भारत भूमि में प्रकट हुए। महावीर स्वामी का जन्म आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व विहार राज्य के वैशाली के कुण्ड ग्राम में लिच्छवी वंश में हुआ था। आपके पिता श्री सिद्धार्थ वैशाली के क्षत्रिय शासक थे। आपकी माता श्रीमती त्रिशला देवी धर्मपरायण भारतीयता की साक्षात प्रतिमूर्ति थी। वाल्या अवस्था में महावीर स्वामी का नाम वर्धमान था। किशोरावस्था में एक भयंकर नाग तथा मदमस्त हाथी को वश में कर लेने के कारण आप महावीर के नाम से पुकारे जाने लगे थे। यद्यपि आपको पारिवारिक सुखों की कोई कमी न थी

लेकिन यह पारिवारिक सुख तो आपको आनंदमय ओर सुखमय फूल ना होकर दुखों एवं कॉटों के सामान चुभने लगे। आप सदैव संसार की असारता पर विचारमग्न रहने लगे। आप बहुत ही दयालु और कोमल स्वभाव के थे। अतः प्राणियों को दुख को देखकर संसार से विरक्त का रहने लगे। युवावस्था में आपका विवाह एक सुंदर राजकुमारी से हो गया। फिर भी आप अपनी पत्नी के प्रेम आकर्षण में बंधे नहीं, अपितु आपका मन और अधिक संसार से उचटता चला गया। 28 वर्ष की आयु में आपके पिताजी का निधन हो गया। इससे आपका विरागी मन और खिन्न हो गया। आप इसी तरह संसार से विराग लेने के लिए चल पड़े थे, लेकिन ज्येष्ठ भाई नंदिवर्धन के आग्रह पर दो वर्ष और गृहस्थ जीवन के जैसे तैसे काट लिए। इन दो वर्षों के भीतर महावीर स्वामी ने याचाहीदान-दक्षिणा दी। लगभग 30 वर्ष की आयु में अपने संन्यास पथ को अपना लिया। आपने इस पथ के लिए गुरुवार पार्श्वनाथ का अनुयायी बनकर लगभग 12 वर्ष तक अनवरत कठोर साधना की थी। इस विकट तपस्या के फलस्वरूप आपको सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ। अब आप जंगलों की साधना को छोड़ कर शहरों में अपने साधनारत कर्म का विस्तार करने लगे। आप जनमानस को विभिन्न प्रकार से ज्ञानोपदेश देने लगे।

आपने लगभग 40 वर्षों तक बिहार प्रांत के उत्तर दक्षिण स्थानों अपनी मतों का प्रचार कार्य किया। इस समय आपके अनेकानेक शिष्य प्रशिष्य बनते गए और वे सभी आपने सिद्धांत- मतों का प्रचार कार्य करते गए।

महावीर स्वामी ने जीवन का लक्ष्य केवल मोक्ष प्राप्ति माना है। आपने अपने ज्ञान- किरणों के कारण जैन धर्म का प्रवर्तन किया। जैन धर्म के पांच मुख्य सिद्धांत है – सत्य, अहिंसा, चोरी न करना, आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना, जीवन में शुद्ध आचरण इन पांचों सिद्धांतों पर चलकर ही मनुष्य मोक्ष या निर्वाण प्राप्त कर सकता है। महावीर स्वामी ने सभी मनुष्यों को इस पथ पर चलने का ज्ञानोपदेश दिया है।

महावीर स्वामी ने यह भी उपदेश दिया है कि जाति-पाँति से न कोई श्रेष्ठ या महान बनता है और ना उनका कोई स्थायी जीवन मूल्य ही होता है। इसलिए मानव मात्र के प्रति प्रेम और सद्भावना की स्थापना का ही उद्देश्य मनुष्य को अपने जीवनोद्देश्य के रूप में समझना चाहिए। सब की आत्मा को अपनी आत्मा के ही समान समझना चाहिए यही मनुष्यता है।

भगवान महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर के रूप में आज भी सुप्रसिद्ध ,सम्माननीय, पूज्य और आराध्य है। यद्यपि आप की मृत्यु 92 वर्ष की आयु में विहार राज्य में हुई, लेकिन आज भी आप अपनी धर्म–प्रवर्तन के पथ पर अपने महान कार्यो के कारण यश से हमारे अज्ञानान्धकार को दूर कर रहे हैं।

पापा का गुड्डा

कशिश मनोचा
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

किसने सोचा था, सब यू संभल जाएगा।
पापा का गुड्डा भी एक दिन शेर बन जाएगा।
किसने सोचा था, एक रोज़ ऐसा आएगा।
छोटी -छोटी बातों पर रोने वाला, रोना भूल जाएगा।
किसने सोचा था, ज़िंदगी यूं मोड़ लेगी।
बातें कुछ अनकही सीख देगी।
किसने सोचा था, सफर यूं संवर जाएगा।
हर राह में सहारा ढूँढने वाला अकेले चलना सीख जाएगा।
किसने सोचा था, एक पल ऐसा आएगा।
दूसरों से उम्मीद रखने वाला, खुद उन पर खरा उतरना सीख जाएगा।
किसने सोचा था, जिंदगी इतनी हसीन बन जाएगी।
हर दुख में एक खुशी ढूंढ ली जाएगी।
किसने सोचा था, सब इतना आसान हो जाएगा।
हर बात में हार मानने वाला, हार से सीखना सीख जाएगा।
किसने सोचा था, सब यूं बदल जाएगा।
हर परेशानी से डरने वाला, उसका सामना करना सीख जाएगा।
किसने सोचा था, सब यू संभल जाएगा।
पापा का गुड्डा, पापा के बाद!
एक दिन शेर बन जाएगा।

माँ की ममता

सौम्या पटेल
बी.ए दिव्तीय वर्ष

तुम्हारी आँखों की नमी में, यादें देखती हूँ।
जब चली जाती हो दूर, तुम्हारी राहे देखती हूं।।

इस संसार में तुम्हारे जितना प्यार मुझे नहीं कर सकेगा कोई,
तुम्हारी जगह हे मां! मेरे जीवन में कोई नहीं भर सकेगा।।

वो जो दी गई तेरी सौगातें हैं,
मुझे आज भी याद है, सारी तेरी बातें हैं।
याद है मुझे तेरा वो गलतियों पर टोकना
चलूँ गलत पथ पर तो, तेरा वो रोकना।

तेरी ममता के आंचल तले, वो छिपकर सोना,
पिताजी डांटे तो उसमें दुबककर सुबक-सुबक रोना।
खूब बचपन जिया था मैंने, तेरी आंचल की छांव में,
कितना सुकून व मज़ा था, तेरी निराली प्यार भरी गोद में।

घुटनों पर रेंगती थी, पैरों पर चलवाया तूने
मुख से मम -मम कहती थी, माँ कहना सिखाया तूने।
तेरे हाथों की वो सादी रोटी-सब्जी,
जिसका कोई तोल नहीं,
अतुल्य है तेरे हाथों का वो जादू,
जिसका जग में कोई मोल नहीं।

तेरी कहानियाँ, लोरियाँ सुलाती थी मुझे,
ले जाकर परीलोक में,
कैसे रह सकती हूँ, तेरे बिना, इस नफरत भरे लोक में,
सब कहते हैं माँ देवतुल्य होती है, इस लोक परलोक में,
पर वह तो देवों की देव है, रखती है फूलों की जन्नत में।

माँ तो बरसात की मिट्टी की वो सौंधी सुगंध है,
माँ तो सूरज की तपिश से परे,
एक निर्मल छाया है।
माँ तो बस मां है, जिसे सारी दुनिया करती वंदन है,
माँ को जिसने नहीं समझा, वो कुछ नहीं समझ पाया।

एक हिंदी काव्य संग्रह

वर्षा श्रीपाल
बी.ए.दिव्तीय वर्ष

क्या खोजते हो दुनिया में,
जब सब कुछ तेरे अंदर है।
क्यों देखते हो औरों में,
जब तेरा मन ही दर्पण है।

दुनिया बस एक दौड़ नहीं,
तू भी अश्व नहीं है धावक।
रुक कर खुद से बातें कर ले,
अंतर मन को शांत कर ले।

सपनों की गहराई समझो,
अपने अंदर की अच्छाई समझो।
स्वाध्याय की आदत डालो,
जीवन को तुम खुलकर जी लो।

आलस्य तुम्हारा दुश्मन है तो,
पुरुषार्थ को अपना दोस्त बनाओ
जीवन का ये रहस्य समझ लो,
और खुशियों से तुम नाता जोड़ो।

भारत में बेरोजगारी की समस्या

चुकेन्द्र मरावी
बी.ए.दिव्तीय वर्ष

बेरोजगारी का सीधा-सीधा शब्दों में संबंध काम या रोजगार के अभाव से है, या कहा जा सकता है कि जब किसी देश की जनसंख्या का अनुपात वहाँ उपस्थित रोजगार के अवसरों से कम हो, तो उस जगह बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

बढ़ती बेरोजगारी के कई कारण हो सकते हैं जैसे बढ़ती जनसंख्या, शिक्षा का अभाव, औद्योगिकीकरण आदि।

बेरोजगारी की समस्या– बेरोजगारी/बेकारी से तात्पर्य उन लोगों से है, जिन्हें काम नहीं मिलता ना की उन लोगो से जो काम करना नहीं चाहते। यहाँ रोजगार से तात्पर्य प्रचलित मजदूरी की दर पर काम करने के लिए तैयार लोगों से है। यदि किसी समय किसी काम की मजदूरी 110 रोज़ है और कुछ समय पश्चात उसकी मजदूरी घटकर 100 हो जाती है और कोई व्यक्ति इस कीमत पर काम करने के लिए तैयार नहीं है तो वह व्यक्ति बेरोजगार की श्रेणी में नहीं आएगा। इसके अतिरिक्त बच्चे, बड़े, अपंग, वृद्ध या साधु-संत भी बेरोजगारी की श्रेणी में नहीं आते। जनसंख्या वृद्धि और शिक्षा की कमी में गहरा संबंध है जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती गई, उनके हिसाब से न तो शिक्षा के साधनों की वृद्धि हुई ना ही परिवार में हर बच्चे को ठीक से शिक्षा का अधिकार मिल पाया न व्यवस्था। आज भी भारत में अधिकतर जनसंख्या अशिक्षित हैं। परिवार में ज्यादा बच्चों के चलते हर किसी को शिक्षा देने में माता-पिता असमर्थ पाये गए, जिसके कारण परिणाम यह हुए, कि या तो परिवार में बेटियों से शिक्षा का अधिकार छीना जाने लगा या पैसों की कमी के चलते परिवार के बड़े बच्चों को अपनी पढ़ाई छोड़कर मजदूरी में लगना पड़ा। जिसके परिणाम उन्हें आगे जाकर बेरोजगारी के रूप में भुगतने पड़े। जिस हिसाब से जनसंख्या में वृद्धि हुई उस हिसाब से उद्योग और उत्पादन में वृद्धि नहीं हुई। यह भी बढ़ती बेरोजगारी का एक कारण है। तेजी से औद्योगिकीकरण भी बढ़ती वेरोजगारी का कारण है। पहले भारत में हस्तकला का काम किया जाता था, जो विश्व प्रसिद्ध था, परन्तु औद्योगिकीकरण के चलते यह कला विलुप्त सी हो गयी और इसके कलाकार वेरोजगार।

शिक्षा और बेरोजगारी: आज भी भारत की जनसंख्या काफी बड़े अनुपात में अशिक्षित हैं, तो अशिक्षा के चलते वेरोजगारी का आना तो स्वाभाविक बात है, परन्तु आज-कल शिक्षा के साथ एक वहुत ही बड़ी समस्या है, हर छात्र के द्वारा एक ही तरह की शिक्षा को चुना जाना। जैसे आजकल हम कई सारे इंजीनियर्स को बेरोजगार भटकता देखते हैं। इसका कारण इनकी संख्या की अधिकता है। आजकल हर छात्र एक दूसरे को फॉलो करना चाहता है। उसकी अपनी स्वयं की कोई सोच नहीं बची वो बस दूसरों को देखकर अपने क्षेत्र का चयन करने लगा है।

हिंदी की कविता

संकलित

जिस हिंदी ने हमें पहचान दी, हम क्यों इसे भूल रहे हैं
अनुवादक का सहारा लेकर लोगों को अपनी बात बता रहे हैं।
कभी इसी भाषा में लोग प्यार से कह देते थे,
अब पता नहीं क्यों लोगों को हिंदी बोलने में शर्म आती है।
कभी इसी भाषा से लोग कविता कहानी अलंकार और
अनेक रसों का प्रयोग किया करते थे और राष्ट्रभाषा कहते थे।
कभी हिंदी की कहानियों पर इतनी हँसी आती थी
तो कभी इतना क्रोध आता था
तो कभी वीर रस के उदाहरणों से
मन और तन गदगद हो जाया करता था।
कह गयी न जाने हिंदी ऐसा लगता है
मानो मेरा बचपन चला गया हो।

हिंदी भाषा

कृष्णा नामदेव
बी.ए. द्वितीय वर्ष

विश्व की प्राचीन और सरल भाषाओं की सूची में हिंदी को अग्रिम स्थान मिला है। हिंदी भारत की मूल भाषा है। हिंदी भाषा हमारी संस्कृति व संस्कारों की पहचान है। हिंदी भाषा हमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान और गौरव प्रदान करती है। विश्व में सबसे ज्यादा बोलने वाली भाषा में हिंदी का स्थान दूसरा आता है। भारत देश में हिंदी भाषा सबसे ज्यादा बोली जाती है इसलिए हिंदी भाषा को 14 सितंबर 1949 के दिन आधिकारिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

अगर हम हिंदी भाषा की उत्पत्ति की बात करें तो इसका जन्म लगभग 1000 वर्ष पहले माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि हिंदी का जन्म देव भाषा संस्कृत की देन है। संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट, हिंदी- यह हिंदी भाषा के विकास का क्रम है। हिंदी एक भावनात्मक भाषा है, जो लोगों के दिलों को आसानी से छू लेती है। हिंदी भाषा हमारे भारत देश की एकता का सूत्र है। हिंदी भाषा से हम अपने विचारों और

दूसरे लोगों तक पहुंचाते हैं। हिंदी भाषा हमारी मातृभाषा है। एक भारतीय होने के नाते हमारा कर्तव्य बनता है कि हम हिंदी के उपयोग को बढ़ावा दें तथा उसे महत्त्व दें। एक स्वतंत्र देश की खुद की एक भाषा होती है, जो उस देश का मान-सम्मान और गौरव होती है। हिंदी सिर्फ भाषा के रूप में काम नहीं करती बल्कि यह सभी लोगों को एक-दूसरे से जोड़ती है।

हमारे देश में ऐसे बहुत से लोग हैं, जिनको हिंदी भाषा की जानकारी होते हुए भी अन्य भाषा जैसे अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं क्योंकि वे हिंदी बोलने से स्वाभिमान या प्रतिष्ठा में कमी समझते हैं कहने का अर्थ यह हुआ कि वे सोचते हैं कि हिंदी बोलने से मान में कमी हो जाएगी और अंग्रेजी को उपयोग में लाते हैं जो कि गलत है। हमें हिंदी को बढ़ावा देना चाहिए ना कि किसी अन्य भाषा को। ऐसा नहीं है कि हमें अन्य भाषाएँ प्रयोग में नहीं लानी चाहिए, बल्कि सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए, परंतु अपनी हिंदी को भी बराबर सम्मान देना चाहिए। आज के युग में इंटरनेट एक ऐसी जगह है जहाँ हम हर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हिंदी भाषा भी अब इंटरनेट पर अपने पैर जमाते जा रही है। आज के समय में हिंदी भाषा समाचार पत्र से लेकर हिंदी ब्लॉग तक अपनी पहचान हासिल कर रही है।

हिंदी के प्रति हमारा कर्तव्य है की हमे हिंदी के विस्तार के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। इसका हमें भरपूर सम्मान करना चाहिए। सभी को ये समझना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग करना हीनता नहीं बल्कि ये हमारा गौरव है।

बुद्धि का महत्त्व

चंचल गौतम
बी.ए. द्वितीय वर्ष

एक बुद्धिमान राजा था। उसका काफी बड़ा साम्राज्य था। उसके राज्य में प्रजा हर तरह से खुशहाल थी। राजा को अपने उत्तराधिकारी की तलाश थी। उसके तीन बेटे थे। राजा इस पुरानी परंपरा को नहीं निभाना चाहता था कि सबसे बड़े बेटे को ही गद्दी पर बिठाया जाए। वह सबसे बुद्धिमान और काबिल बेटे को सत्ता सौंपना चाहता था। इसलिए राजा ने उत्तराधिकारी के लिए तीनों की परीक्षा लेने का फैसला किया। राजा ने तीनों बेटों को अलग-अलग दिशाओं में भेजा। उसने हर बेटे को सोने का एक-एक सिक्का देते हुए कहा कि वे इससे ऐसी चीजें खरीदे, जो पुराने महल को भर दें। पहले बेटे ने सोचा

कि पिता तो सठिया चुके हैं। इस थोड़े से पैसे से इस महल को किसी चीज़ से कैसे भरा जा सकता है। इसलिए वह एक मयखाने में गया, शराब पी और सारा पैसा खर्च डाला। राजा के दूसरे बेटे ने इससे भी आगे सोचा। वह इस नतीजे पर पहुंचा की शहर में सबसे सस्ता तो कूड़ा कचरा ही है। इसीलिए उसने महल को कचरे से भर दिया। तीसरे बेटे ने 2 दिन तक इस पर चिंतन-मनन किया कि महल को सिर्फ एक सिक्के से कैसे भरा जा सकता है। वह ऐसा करना चाहता था जिससे पिता की उम्मीद पूरी होती हो। उसने मोमबत्तियों और लोबान की बत्तियाँ खरीदी और फिर पूरे महल को रोशनी और सुगंध से भर दिया। उस तीसरे बेटे की बुद्धिमानी से खुश होकर राजा ने उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया। इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि बुद्धि से कुछ भी पाया जा सकता है।

दो मुक्तक

धनञ्जय चौरसिया
बी.ए. तृतीय वर्ष

ईश्वर ना करे तुम कभी ये दर्द सहो
दर्द, हाँ अगर चाहो तो इसे दर्द कहो
मगर ये और भी बेदर्द सजा है ऐ दोस्त!
कि हाड़-हाड़ चिटख जाए मगर दर्द न हो!
आज माथे पर, नजर में बादलों को साध कर
रख दिए तुमने सरल संगीत से निर्मित अधर
आरती के दीपकों की झिलमिलाती छांह में
बांसुरी रखी हुई ज्यों भागवत के पृष्ठ पर।

पांव और पंख

कु. माधवी बनाफर
बी.ए.तृतीय वर्ष

बहुत वजन हो गया हो तो थोड़े झुक जाओ
मगर घबड़ा के नहीं समझ के साथ

अपने को सौंप न दो वक्त के हाथ
क्योंकि वक्त तो किसी का हाथ नहीं पकड़ता
उड़ चला है वह न वह शीत में ठिठुरता है
न गर्मी में जलता है वह
पदचिन्ह-हीन आकाश में
ऊपर नीचे गोल या लहरदार
साध के एक छंद उड़ता रहता है!
न वह अच्छा है ना बुरा है
न वह कोमल है न सख्त
वह है सिर्फ शुद्ध वक्त!
वह ना हमारे साथ है, ना हमारे खिलाफ़
जिसने यह समझ लिया अंधेरे उजाले को ठीक जिया
वह निशंक है फिर भूलें ही क्षण के पंख हैं
और हमारे पांव! पांव हमारे बलशाली है
अगर जरूरत पड़ ही जाए
तो पंखों बालों को हम पकड़ सकते हैं
पाल सकते हैं उनकी उड़ानों को अपनी जरूरत में
डाल सकते हैं हमारे पांव हैं
और समय के पंख है इसलिए हम निशंक है!

माँ अच्छी नहीं

विरजोत सिंह
बी.ए. तृतीय वर्ष

माँ अच्छी नहीं है। वह खुद से ज्यादा मुझसे प्यार करती है।
माँ अच्छी नहीं है। वह खुद से ज्यादा मुझसे प्यार करती है।
पहले खुद मारती फिर मनाती है।
स्वयं दो रोटी खाती मुझको चार खिलाती है।
माँ अच्छी नहीं है क्योंकि मेरे लिए वह पापा से लड़ जाती है।
पापा की मार से मुझे बचाती है।
भैया से छुपाकर मुझे चीजें दिलाती है
खुद रो कर भी मुझे हंसाती है।
ऐसी माँ कहां सबको मिल पाती है।
माँ अच्छी नहीं क्योंकि वे खुद से पहले मेरे बारे में सोचती है।
माँ खुद से ज्यादा मुझसे प्यार करती है ।

रास्ते (फतेहपुर सीकरी)

देव मौर्य
बी.ए. तृतीय वर्ष

ये लोग कहाँ जाने की जल्दी में थे
जो अपना सामान बीच रास्तों में रखकर भूल गए हैं?
नहीं यह मत कहो कि इन्हीं रास्तों से
हजारों – हज़ारो फूल गए हैं
वह आकस्मिक विदा। (कदाचित व्यक्तिगत)
जो शायद जाने की जल्दी में फिर आने की बात थी।
ये रास्ते जो कभी रास्ते थे,
अब आम रास्ते नहीं।
ये महल, जो बादशाहों के लिए थे
अब किसी के वास्ते नहीं।
आश्चर्य, की उन बेताब जिंदगियों में
सब्र की गुंजाइश थी।......
और ऐसा सब्र की अब ये पत्थर भी ऊब रहे हैं।

इंटरनेट आज की आवश्यकता

आकांक्षा कावर्ती
बी.ए. तृतीय वर्ष

वर्तमान समय में इंटरनेट एक ऐसा शब्द हैं, जिससे सभी लोग परिचित हैं. इंटरनेट के बिना आज जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती. तो इंटरनेट को किस प्रकार परिभाषित किया जा सकता हैं ?

इंटरनेट क्या है: इंटरनेट, सम्पूर्ण विश्व में फैला हुआ एक ऐसा नेटवर्क हैं, जिसके माध्यम से एक कंप्यूटर, विश्व के किसी भी अन्य कंप्यूटर से कनेक्ट हो सकता हैं। यह **इंटर कनेक्टेड कंप्यूटर्स का नेटवर्क** है।

इंटरनेट की खोज किसने की - इंटरनेट की खोज करना किसी एक व्यक्ति की बात नहीं थी बल्कि इसकी खोज कई वैज्ञानिकों और इंजीनियरों द्वारा की गई। 1957 में शीतकालीन युद्ध के दौरान, अमेरिका ने एक तरकीब सुझाई और एक ऐसी तकनीक बनाने का निर्णय लिया जिसके बाद आप एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर को आसानी से जोड़ने में सक्षम हो सके। जिसका सुझाव हर किसी को अच्छा लगा और उन्होंने उसे पास कर दिया अब वो सुझाव आज के समय में काम आ रहा है। 1980 उसका नाम इंटरनेट रखा गया। इसको आजकल के समय में लोगों की लाइफलाइन कहा जाता है।

इंटरनेट महत्व

इंटरनेट के जरिए आप कही भी बैठे हो वहां से पूरी दुनिया की चीजें सर्च कर सकते हो। इससे आप किसी बीमारी, किसी जगह, तरह-तरह के खाने और भी कई चीजों के बारे में पता कर सकते हो। क्योंकि ये आपको हर तरह की सुविधा उपलब्ध कराता है।

इंटरनेट सुविधा की उपलब्धता

इंटरनेट का उपयोग इसके लिए बनाये गये विभिन्न ब्राउज़र्स द्वारा किया जा सकता हैं, जैसे -: विंडोज एक्सप्लोलर, गूगल क्रोम, मोज़िला फायरफॉक्स, आदि. जो संस्था उपभोक्ताओं को इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराती हैं, उसे इंटरनेट सर्विसेज प्रोवाइडर्स [ISP] कहते हैं। भारत में यह सुविधा देने वाली कुछ बड़ी कंपनियां हैं -:

- बी.एस.एन.एल.,
- वोडाफ़ोन,
- एयरटेल,
- आईडिया,
- एयरसेल

शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यकता

इंटरनेट का शिक्षा के विकास में वहुत योगदान हैं. इसके लिए इसे हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं -:

- **परीक्षा देना** :- GMAT, GRE, SAT, बैंकिंग एग्जाम और विभिन्न एंट्रेंस एग्जाम आजकल ऑनलाइन ही लिए जाते हैं।.

- **ट्रेनिंग प्राप्त करना :-** सॉफ्टवेयर, नेटवर्किंग, वेब टेक्नोलॉजी, कंपनी सेक्रेटरी, आदि कोर्सेज के लिए ऑनलाइन ट्रेनिंग की सुविधाएँ इंटरनेट के द्वारा ही उठाई जा सकती हैं।
- **दूरस्थ शिक्षा [Distance Learning] :-** विभिन्न विश्वविद्यालयों [यूनिवर्सिटी] द्वारा घर बैठे शिक्षा प्राप्त करने का अवसर आपको इंटरनेट द्वारा ही प्राप्त होता हैं।

मनोरंजन का साधन

इंटरनेट का प्रयोग मनोरंजन के लिए भी व्यापक रूप से किया जाता हैं. इंटरनेट पर पूरे विश्व की फ़िल्में, सीरियल, जोक्स, कंप्यूटर गेम्स, सोशल मीडिया और न जाने क्या–क्या हमारे मनोरंजन के लिए उपलब्ध हैं.

ऑनलाइन बुकिंग :-

आज अगर आपको कही जाना हैं, तो आप उस स्थान पर पहुंचकर बुकिंग करने की बजाय इंटरनेट के द्वारा बुकिंग करके जाना अधिक पसंद करते हैं, इससे आपके समय और साधन की तो बचत होती ही हैं, साथ ही आप अनावश्यक रूप से होने वाली परेशानियों से भी बच जाते हैं. इनमें ऑनलाइन ट्रेन और बस के टिकट की बुकिंग, फिल्म आदि के शो की बुकिंग, होटल बुकिंग, आदि शामिल हैं.

इंटरनेट के विशेषता / लाभ

इंटरनेट की विशेषताएं आजकल के लोग काफी अच्छे से बता सकते हैं क्योंकि आजकल के लोगों की पूरी जिंदगी और उनके कार्य जो इस पर निर्भर करते हैं। इसकी विशेषताएं कई हैं लाभ भी क्योंकि इसके जरिए हर कोई कई तरह के काम करना पसंद करता है। आजकल लॉकडाउन के समय इंटरनेट ही था जिसने लोगों की जिंदगी को संभाल रखा था। इसी के जरिए लोगों ने लॉकडाउन और कोरोना जैसी समस्या को दूर करने का सहारा बना दिया था। आजकल हर घर में हर किसी के फोन में आपको इंटरनेट उपलब्ध होगा। जिसे आप कहीं भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

इंटरनेट से हानि- इंटरनेट से कई तरह के फायदे हैं, लेकिन नुकसान भी उतने ही हैं, क्योंकि इसी के कारण आप कई तरह की समस्या के शिकार भी हो जाते हैं। जैसे- साइबर क्राइम इसके जरिए कोई भी आसानी से आपको ब्लैकमेल कर सकता है। इसी के कारण आपके लिए हानि से भरा होता है इंटरनेट। इसके कारण कई लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा है साथ ही लोगों को ना जाने किस तरह की तकलीफ हुई है।

साहित्य का उद्देश्य

पूनम धुर्वे
बी.ए. द्वितीय वर्

साहित्य समाज का प्रतिबिंब साहित्य होता है। साहित्य समाज तथा व्यक्ति दोनों के उत्थान कामनाओं का प्रतिनिधित्व करके समाज को संस्कृति एवं सभ्यता के सूत्र में बांधता है और संस्कृति तथा सभ्यता के इस स्वरूप को सदियों से अपने में संजोए है। संसार में शिशु जन्म लेते ही अपनी माता के संपर्क में आता है और उसी के प्रति भी आकर्षित होता है। अपनी सुख-दुख की अनुभूतियों को वह हंसकर या रो कर माता के सामने प्रकट करता है। इसी प्रकार संसार के प्रति हमारी कुछ प्रतिक्रिया होती है, आकर्षण एवं विकर्षण होता है। उसी के आधार पर सुख तथा दुख की अनुभूति होती है। इन अनुभूतियों का आधार है- ज्ञान भावना, संकल्प। देश, काल तथा परिस्थिति के अनुसार इन मनोवृत्तियों का प्रादुर्भाव होता है। ये तीनों इस संसार की प्रतिक्रिया स्वरूप जन्म लेती है। हमारा ज्ञान भी किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति पाता है। चाहे वह अभिव्यक्ति के रूप में होता है, रचनात्मक कौशल के रूप में अथवा शारीरिक प्रदर्शन के रूप में। परन्तु भावों में शाब्दिक अभिव्यक्ति ,भावाभिव्यक्ति के रूप में अथवा शारीरिक प्रदर्शन के रूप में। परन्तु भावों में शाब्दिक अभिव्यक्ति की भावना प्रबल रहती है।

मनोवृत्तियों के साथ हमारी कुछ प्रवृत्तियाँ भी होती है। यह प्रवृत्ति प्रतिक्रिया की है।हर व्यक्ति किसी क्रिया के प्रति प्रतिक्रिया करता है।भय से भागना, क्रोध से लड़ना,प्रेम से रति आदि की प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। अभिव्यक्ति में जो शाब्दिक अभिव्यक्ति होती है, वही श्रेष्ठ है। उसका स्थायित्व है, उसमें सामाजिकता है।साहित्य में इसी प्रकार की के दर्शन होते हैं। साहित्य का अर्थ है-सहित होने की भावना - साहित्यस्थ भावः साहित्य।सहित का अर्थ साथ होना है अथवा हित के साथ होना है। यदि विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य में सहित का अर्थ हित के साथ होता है।

संविधान का निर्माण

श्वेता चौहान
बी.ए.तृतीय वर्ष

-एक नए युग की शुरुआत-

भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 को अस्तित्व में आया और यह दुनिया का सबसे लंबा संविधान है। यदि हम अपने देश के आकार और विविधता पर ध्यान दें तो इसकी लंबाई व पेचीदगी को आसानी से समझ सकते है स्वतन्त्रता के समय भारत न केवल एक विशाल और विविधतापूर्ण बल्कि गहरे तौर पर बिखरा हुआ देश भी था। देश की एकजुटता और प्रगति के लिए एक विस्तृत, गहन विचार विमर्श कर आधारित और सावधानीपूर्वक सूत्रबद्ध किया गया संविधान लाजमी था। हमारे संविधान ने अतीत और वर्तमान के घावों पर मरहम लगाने और विभिन्न वर्गों,जातियों व समुदायों में बंटे भारतीय को एक साझा राजनीतिक प्रयोग में शामिल करने में मदद की है। दूसरी ओर, इस संविधान में लंबे समय से चली आ रही ऊंचे नीचे और अधीनता की संस्कृति मेंलोकतान्त्रिक स्थानों को विकसित करने का भी प्रयास किया है।

भारत के संविधान को दिसंबर 1946 से दिसंबर 1949 के बीच सूत्रबद्ध किया गया। इस दौरान संविधान सभा में इसके मसौदे के एक-एक भाग पर लंबी चर्चाएं चली। संविधान सभा के कुल 11 सत्र हुए जिनमें 165 दिन बैठकों में गए। सत्रों के बीच विभिन्न समितियों और उपसमितियों को मसौदे को सुधारने और संवारने का काम दिया गया। राजनीतिशास्त्र की पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने के बाद आप यह जान चुके होंगे कि भारत का संविधान कैसा है। आप देख चुकें हैं कि आजादी के बाद इस संविधान की क्या उपयोगिता और सार्थकता रही है। इस अध्याय में हम संविधान के इतिहास और निर्माण के दौरान हुई गहन परिचर्चा को जानेंगे। यदि संविधान सभा में उठने वाली आवाज़ों को सुनने का प्रयास करें तो हमें उन प्रक्रियाओं का अंदाजा लग जाएगा जिनके माध्यम से संविधान को सूत्रबद्ध किया गया और एक नए राष्ट्र की कल्पना साकार हुई।

मेरी उलझन

नेहा कुशवाह
बी.ए दिव्तीय वर्ष

टूटे हैं सपने, टूटी हूँ मैं, न जाने,
अब खुद से कितनी रूठी हूँ मैं।
रोज़ खुद से लड़ती जा रही हूँ।
हूँ अपने सवालों के जवाब ढूंढती जा रही हूँ।
हर सुबह खुद से मेरी एक नई जंग होती है,
आज बस खुद को पूरा दिन खुश रखूँ,
एक यही उमंग होती है।
पर जैसे जैसे दिन ढलता है,
उस अंधेरे की पहचान होती है।
फिर भी सुबह सूरज की किरणों का इंतज़ार करती हूँ।
दिल के हाल अब न किसी को बताती ।
कोई पूछे कैसी हो?
सबको 'ठीक हूँ मैं',
अब यही दिखाती हूँ।
एक उलझे हुए मांझे की तरह
मैं बस उलझती जा रही हूँ,
न जाने मैं क्यों इतनी बदलती जा रहीहूँ।

हाथ पर आसमान

अनुष्का मिश्रा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

लोग ऊंची उड़ान रखते हैं
हाथ पर आसमान रखते हैं
शहर वालों की सादगी देखो-
अपने दिल में मचान रखते हैं
ऐसे जासूस हो गए मौसम
सबकी बातों पर कान रखते हैं

मेरे इस अहद में ठहाके भी
आंसुओं की दुकानें रखते हैं
हम सफीने हैं मोम के लेकिन
आग के बादबान रखते हैं-

समाज में नारी का स्थान

पूजा नेताम
बी.ए. तृतीय वर्ष

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत पग पग तल में।
पीयूष स्रोत से बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।

आदि काल से नारी की महत्ता अक्षुण्ण है। नारी सृजन की पूर्णता है। उसके अभाव में मानवता के विकास की कल्पना असंभव है। समाज के रचनाविधान में नारी प्रेयसी, पुत्री एवं पत्नी अनेक रूप में है। वह सम परिस्थितियों में देवी है तो विषम परिस्थितियों में दुर्गा भवानी। वे समाज रूपी गाडी का एक पहिया है जिसके बिना समग्र जीवन ही पंगु है। सृष्टि चक्र में स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं। मानव जाति के इतिहास पर बात करें तो ज्ञात होगा कि समाज में सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, सभी क्षेत्रों में प्रारंभ से ही नारी की अपेक्षा पुरुष का आधिपत्य रहा है। पुरुष ने अपनी इस श्रेष्ठता और शक्ति संपन्नता का लाभ उठाकर स्त्री-जाति पर मनमाने अत्याचार किए हैं। सहयोगिनी या सहचरी के स्थान पर उसे अनुचर बना दिया और स्वयं उसका पति, स्वामी, नाथ पथ प्रदर्शक और साक्षात् ईश्वर बन गया।

प्राचीन भारतीय समाज में नारी के जीवन के स्वरूप की व्याख्या करें तो हमें ज्ञात होगा कि. वैदिक काल में नारी को स्थान प्राप्त था। वे सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में पुरुष के साथ मिलकर कार्य करती थी। रोमेश और लोपामुद्रा आदि अनेक नारियों ने ऋग्वेद के सूत्रों की रचना की थी। रामायण काल में भी नारी की महत्ता अक्षुण्ण रही। रानी कैकई राजा दशरथ के साथ ही युद्धभूमि में जा कर उनकी सहायता की। महाभारत काल (द्वापर) में नारी पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनैतिक गतिविधियों में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी।

मध्य युग तक आते आते नारी की सामाजिक स्थिति दयनीय बन गई। भगवान बुद्ध द्वारा नारी को सम्मान दिए जाने पर भी भारतीय समाज में नारी के गौरव

का पतन होने लगा। मध्यकाल में शासकों की कामलोलुप दृष्टि से नारी को बचाने के लिए प्रयत्न किए जाने लगे। मध्यकाल में आकर शक्ति स्वरूपा नारी 'अवला' बनकर रह गई। मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में –

अवला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में हैं दूध और आंखो में है पानी।

भक्ति काल में नारी जनजीवन के लिए इतनी तिरस्कृत, शुद्र और उपेक्षित बन गई कि कबीर, सूर, तुलसी जैसे महान कवियों ने उसकी संवेदना और सहानुभूति में दो शब्द तक नहीं कहे।

आधुनिक काल के आते-आते नारी चेतना का भाव उत्कृष्ट रूप से जागृत हुआ। युग-युग की दासता से पीड़ित नारी के प्रति एक व्यापक सहानुभूति दृष्टिकोण अपनाया जाने लगा। बंगाल में राजा राम मोहन रॉय और उत्तर भारत में महर्षि दयानंद सरस्वती ने नारी को पुरुषों के अनाचार की छाया से मुक्त करने को क्रांति का बिगुल बजाया। उनके कवियों की वाणी भी इन दुखी नारियों की सहानुभूति के लिए अवलोकनीय है। कविवर सुमित्रानंदन पंत ने तीव्र स्वर में नारी स्वतंत्रता की मांग की है-

मुक्त करो नारी को मानव,चिरबन्दिनी नारी को।
युग-युग की निर्मम कारा से,जननी सखी प्यारी को।।

हमें वैदिक काल से लेकर आज तक नारी के विविध रूपों और स्थितियों का आभास मिल जाता है। वैदिक काल की नारी ने शौर्य, त्याग, समर्पण, विश्वास एवं शक्ति आदि का आदर्श प्रस्तुत किया। पूर्व मध्यकाल की नारी ने इन्हीं गुणों का अनुसरण करके अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखा। उत्तर मध्यकाल में अवश्य नारी की स्थिति दयनीय रही परंतु आधुनिक काल में उसने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त कर लिया। उपनिषद, पुराण, स्मृति, तथा संपूर्ण साहित्य में नारी की महत्ता अक्षुण्ण है। वैदिक काल में शिव की कल्पना ही अर्ध नारीश्वर रूप में की गयी है। आशा है भारतीय नारी का उत्थान भारतीय संस्कृति की परिधि में हो। वह पश्चिम की नारी का अनुकरण न करके अपनी मौलिकता का परिचय दे।

धन से बड़ा स्वास्थ्य

बिट्टू कुमार
बी.ए.तृतीय वर्ष

स्वास्थ्य को सबसे बड़ा धन कहा गया। यदि रुपया पैसा हाथ से निकल जाए तो भी उसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु एक बार स्वास्थ्य बिगड़ जाये तो उसी पुरानी स्थिति में लाना बहुत कठिन होता है। इसलिए समझदार लोग अपने स्वास्थ्य की हिफाजत मनोयोगपूर्वक करते हैं। अच्छा स्वास्थ्य जीवन के समस्त सुख का आधार है । धन से वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं परन्तु उपभोग अच्छे स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। धनी व्यक्ति यदि अस्वस्थ है तो उसके धन का कोई मूल्य नहीं। गरीब यदि स्वस्थ हैं तो फिक्र की कोई बात नहीं क्योंकि इसके पास स्वास्थ्य रूपी धन है, उसके पास जो कुछ भी है वह उसका उचित उपभोग कर सकता है। अच्छे स्वास्थ्य में एक तरह का सौंदर्य होता है। जो अच्छे स्वास्थ्य से युक्त है उसके मन में उत्साह और उमंग होता है। वे अपना कार्य चिंतामुक्त होकर करता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह स्वास्थ्यप्रद जीवन शैली अपनाएं और अपने तन-मन को स्वस्थ रखे। अच्छे स्वास्थ्य की कामना करने वाले बहुत हैं परन्तु उसके लिए जागरूक होकर प्रयत्न करने वाले थोड़े ही हैं। लेकिन केवल कल्पना करने में स्वास्थ्य को बनाए नहीं रखा जा सकता, इसके लिए सतत चेष्टा करनी पड़ती है। अच्छा एवं संतुलित आहार नियनित दिनचर्या और नियमित व्यायाम स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए मूलभूत तत्व हैं। भोजन में फल, अनाज, सब्जी और दूध का समन्वय होना चाहिए। फल, हरी ताज़ी सब्जियों, अंकुरित अनाज तथा दूध की कुछ न कुछ मात्रा प्रतिदिन लेने से व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा बना रहता है। साथ ही बासी, बाज़ारू, अधिक तला-भुना और मैदे की अधिक मात्रावाला भोजन मानव स्वास्थ्य के प्रतिकूल होता है।

शरीर को सवस्थ रखने के लिए नियमित व्यायाम का भी पर्याप्त महत्त्व होता है। व्यायाम शरीर के सभी अंगों को मजबूती प्रदान करता है तथा बीमारियों से लड़ने की शक्ति उपलब्ध कराता है। यह व्यक्ति को फुर्तीला और तनाव रहित बनता है। भारतीय स्वास्थ्य विज्ञान 'आयुर्वेद' में शरीर को स्वस्थ रखने में योगासनों और अन्य उपायों की विशेष चर्चा की गयी है। आयुर्वेद बताता है कि मानव मौसम और ऋतु के अनुकूल किस तरह की जीवन शैली अपनाएं। स्वास्थ्य रूपी धन को संचित रखने के लिए विभिन्न स्तरों पर कायम रखी जाने वाली सफाई व्यवस्था का पर्याप्त महत्त्व है। शरीर की सफाई, घर, वस्त्र, पर आस पड़ोस की सफाई पूरे नियम से किए जानी चाहिए। सफाई व्यवस्था सही होने पर रोगाणु शरीर से दूर रहते हैं। उपरोक्त उपायों को अपनाने वाला व्यक्ति हमेशा स्वस्थ बना रहता है। क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। इसलिए हमें स्वस्थ रहने के लिए सभी आवश्यक उपाय करने चाहिए।

प्रकृति पर विजय

रागिनी नापित
बी.ए.तृतीय वर्ष

महात्मा गाँधी अक्सर कहते थे कि भारत की आत्मा उसके गांवों में निवास करती है। आजादी के समय भारत अधिकांशतः किसानों और मज़दूरों का देश था। इसकी करीब तीन चौथाई आबादी कृषि कार्य में लगी हुई थी और देश का 60% सकल घरेलू उत्पाद भी इसी क्षेत्र से आता था। इसके साथ ही देश में एक छोटा सा लेकिन विकासशील औद्योगिक क्षेत्र भी मौजूद था जिसमें यहाँ के करीब 12 फीसदी श्रम शक्ति लगी हुई थी और जो देश के 25 फीसदी सकल घरेलू उत्पाद में योगदान करता था।

भारत के किसान राष्ट्र और उसकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ थे। पूरे उपमहाद्वीप में कृषि कार्यों में बहुत विभिन्नता थी। उदाहरण के लिए देश के उत्तरी और पश्चिमी गेहूं उत्पादक क्षेत्रों और दक्षिण व पूर्वी चावल उत्पादक क्षेत्रों में बहुत अंतर था। गेहूं उत्पादक इलाकों में जहाँ महिलाएं कृषि कार्य में बहुत कम हिस्सा लेती थी, वही चांवल उत्पादन के कार्यों में उनकी अहम् भागीदारी थी। धान के बिचड़े को उगाने में वो अहम भूमिका निभाती थी। प्रायद्वीपीय भारत का बड़ा हिस्सा न तो गेहूं उगाता था ना तो चांवल ही। सूखे से ग्रस्त उन इलाकों की मुख्य फसल मोटे अनाज थे जो ऐसे इलाकों में पैदा हो सकते थे। खाद्यान्नों के अलावा किसान कई तरह के फल और सब्जियां भी उगाते थे। साथ ही वे कपास और गन्ना जैसी बाजार में बिकने वाली फसलें भी उगाते थे।

इस विविधता के बावजूद लगभग हर एक जगह भारतीय कृषि सर्दियों के अनुभवों और परंपराओं पर ही आधारित थी तो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मिलती आ रही थी। नए-नए शोधों और किताबी प्रयोग को यहाँ कोई जगह नहीं मिल पाई थी। हर एक जगह यह मुख्यतः स्थानीय योगदान पर आधारित थी। कृषि में उपयोग लाया जाने वाला पानी, ईंधन, चारा और खाद्य एक गांव के ही आसपास से संग्रह किए जाते थे। खेती का काम हल से किया जाता था जिसे दो बैलों की जोड़ी खींचती थी। लोगों के घर अमूमन लकड़ी और पुआल से बने होते थे जो स्थानीय जंगलों में प्राप्त किए जाते थे। हर एक जगह जो लोग खेती के काम में लगे हुए थे वे उन लोगों के साथ-साथ रहते थे जो खेती का काम नहीं करते थे खेतिहर जातियां जो ग्रामीण आबादी की करीब दो तिहाई हिस्सा थी। वे मुख्य रूप से शिल्पी जातियों और सेवाओं पर निर्भर थी। ये जातियां थीं लुहार, नाई, मेहतर आदि। देश कई हिस्सों में बुनकरों की सक्रिय आबादी

थी। जबकि कुछ हिस्सों में घुमंतू पशुचारको की अच्छी खासी आवादी थी। सामाजिक स्तर पर भी पूरे उपमहाद्वीप में एक ही तरह के जीवन शैली थी। साक्षरता का दर काफी कम था और जातीय भावना काफी मजबूत थी। देश के हर एक गांव में कम से कम आधा दर्जन या उससे भी अधिक जातियों के लोग रहते थे। लोगों में धार्मिक भावना प्रवल रूप से मौजूद थीं। ग्रामीण भारत में वक्त ठहर चुका था। किसान, गड़रिया, वढ़ई, बुनकर सभी उसी तरह से रहते थे जैसे उनके पुरखे रहा करते थे। सन 1940 के एक सर्वेक्षण के मुताबिक देश के जनजीवन का चित्रण कुछ इस तरह से किया गया था –'ज़िंदगी में उसी तरह की सादगी है, मौसम में अनिश्चितता है, खेल और गीतों के प्रति उसी तरह का प्यार है, लोग पड़ोसियों की मदद करने को उसी तरह से तत्पर रहते हैं, और पूरे देश के लोग पहले की तरह ही कर्ज में डूबे रहते हैं।'

भारतीय राष्ट्रवादियों की निगाह में यह निरंतरता जड़ता की एक छोटी सी अभिव्यक्ति थी। कृषि उत्पादकता बहुत ही कम थी, इसीलिए लोगों के स्वास्थ्य और पोषण का स्तर भी निम्न था। सिर्फ एक ही चीज़ बढ़ रही थी और वह थी देश की आवादी। 19 वीं सदी के उत्तरार्ध से जब स्वास्थ्य सेवाओं में बढ़ोतरी हुई, तो लोगों की मृत्यु दर तेजी से गिरने लगे। नतीजतन, जन्मदर स्थिर रहने से आबादी में तेजी से वढ़ोतरी हुई। सन 1881 से लेकर 1941 तक ब्रिटिश भारत की आबादी 25 करोड़ 70 लाख से बढ़ कर 38 करोड़ 90 लाख हो गयी। लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि प्रति व्यक्ति खाद्यान्न की उपलब्धता 200 किलोग्राम प्रति व्यक्ति सालाना से घटकर 150 किलोग्राम सालाना हो गई।

कर्म क्या है?

श्रेया पटेल
बी.कॉम.तृतीय वर्ष

महात्मा वुद्ध अपने शिष्यों के साथ वैठे थे। एक शिष्य ने पूछा कर्म क्या है? महात्मा वुद्ध ने उत्तर दिया मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। एक राजा हाथी पर बैठकर अपने राज्य का भ्रमण कर रहे थे। अचानक वह एक दुकान के सामने रुके और अपने मंत्री से कहा पता नहीं क्यों, लेकिन मैं इस दुकान के मालिक को फांसी देना चाहता हूँ। यह सुनकर मंत्री को वहुत दुख हुआ। लेकिन जव तक वे राजा से इसका कारण पूछता तब तक राजा आगे चल दिए। अगले दिन मंत्री एक आम नागरिक के वेश में दुकानदार से

मिलने उनकी दुकान पर पहुंचा। उसने ऐसे ही दुकानदार से पूछा की उसका कारोबार कैसा चल रहा? दुकानदार चंदन बेचता था। वह बहुत दुखी था और बोला कि ग्राहक मिलने में मुश्किल हो रही है। लोग उसकी दुकान पर आते हैं, चंदन की गुणवत्ता की भी सराहना करते हैं, लेकिन वे कुछ नहीं खरीदते। अब उसकी आशा केवल इस बात पर टिकी है कि राजा शीघ्र ही मर जाए और उसके अंतिम संस्कार के लिए बड़ी मात्रा में चंदन खरीदा जाए। वह उस क्षेत्र में एकमात्र चंदन का दुकानदार था, इसलिए उसे यकीन था कि राजा के मारे जाने के बाद उसके दिन बदल जाएंगे। अब मंत्री को समझ में आया कि राजा उस दुकान के सामने क्यों रुक गए और क्यों उन्होंने दुकानदार को मारने की इच्छा व्यक्त की? शायद दुकानदार के नकारात्मक विचारों के स्पंदन का राजा पर प्रभाव पड़ा और बदले में राजा ने भी अपने भीतर दुकानदार के प्रति नकारात्मक विचार अनुभव किए। बुद्धिमान मंत्री ने इस विषय पर एक क्षण के लिए सोचा। फिर उसने अपनी पहचान और पिछले दिन की घटना बताये बिना कुछ चंदन खरीदने की इच्छा व्यक्त की। दुकानदार बहुत खुश हुआ। उसने चंदन मंत्री को दे दिया। जब मंत्री महल में लौटा तो वह सीधे राजा के दरबार में गया और उसने बताया कि चंदन की दुकानदार ने उनके लिए उपहार भेजा है। राजा हैरान रह गया! जब उसने चंदन की पोटली खोली और उसकी सुगंध को देखकर वह बहुत खुश हुआ। प्रसन्न होकर उसने कुछ सोने के सिक्के चंदन के व्यापारी के पास भेजें। राजा अपने मन से यह सोचकर बहुत दुखी हुआ की उसके मन में दुकानदार को मारने का अवांछित विचार आया। जब दुकानदार को राजा से सोने के सिक्के मिले तो वह बहुत हैरान रह गया। वे राजा की प्रशंसा करने लगा जिसने उसे गरीबी के अभिशाप से बचाने के लिए सोने के सिक्के भेजें। कुछ समय बाद उसे अपने दूषित विचार याद आये जो राजा के प्रति अपने मन में सोचे थे। उसने अपने निजी स्वार्थ के लिए ऐसे नकारात्मक विचारों पर पछतावा हुआ। यदि हम अन्य लोगों के प्रति अच्छे और दयापूर्वक विचार रखेंगे, तो वे सकारात्मक विचार के रूप में हमारे पक्ष लौट आयेंगे। लेकिन अगर हम बुरे विचार का पोषण करेंगे, तो वे विचार हमारे पास उसी रूप में लौट आएँगे।

यह कहानी सुनने के बाद महात्मा बुद्ध ने पूछा,कर्म क्या है? कई शिष्यों ने उत्तर दिया, हमारे वचन, हमारे विचार, हमारी भावनाएँ, हमारी गतिविधियाँ। बुद्ध ने स्वीकृति में सिर हिलाया और कहा, आपके विचार ही आपके कर्म है। अपने प्रतिदिन के विचारों से ही हम अपनी नियति का निर्माण करते हैं। आंतरिक स्पष्टता और स्थिरता पाने के लिए अपने विचारों पर नियमन करें।

रूठना – मनाना

वंशिका जैन
बी.कॉम.तृतीयवर्ष

ऐसी ना रूठों ए जिंदगी,
चलना है तुम्हारे साथ,
रूठ जाए सारा संसार अगर,
तो चलना है तुम्हारे ही साथ।
मेहनत रूठी, मंजिल रुठी,
टूट गया अभिमान।
अपने रूठे सपने छूटे
छूट गया घर-बार।
इंसानियत रूठी दया भी झूठी,
रूठ गए भगवान।
बंद हो गए अब सारे दरवाजे,
जो छूट गया तुम्हारा साथ।
मना ले इस जीवन को,
वरना कौन है मेरे साथ।

विनम्रता

प्रबल राय
बी.ए. तृतीय वर्ष

हम चाहें जीवन में कुछ भी करे, परंतु लोग हमें सबसे अधिक हमारे व्यवहार के कारण ही याद करते हैं। हम समाज में दूसरों के साथ कैसे पेश आते हैं, दूसरों से कैसा व्यवहार करते हैं हम अपनी जिंदगी में जीवन मूल्यों को कितना महत्व देते हैं, यह बातें बेहद मायने रखती है। हमारे जीवन का असली मतलब तभी है जब हम अपने चरित्र की सुंदरता से दूसरों के जीवन संवारने का प्रयास करें, क्योंकि खुद के लिए तो हर कोई जीता है परंतु जो खुद से पहले दूसरों की चिंता करें वही सही मायनों में सच्चा इंसान है। व्यक्ति के चरित्र को आकर्षक बनाने में जो एक चीज़ सबसे ज्यादा

महत्त्व रखती है वह है उसकी विनम्रता। आप अपने भौतिक या बाहरी व्यक्तित्व से किसी को प्रभावित कर पाए या ना कर पाए पर अपने चरित्र की सुंदरता और विनम्रता से आप दुनिया में किसी को भी आकर्षित कर सकते हैं। क्योंकि बाहरी सुंदरता तो बनती बिगड़ती रहती है परंतु मन की विनम्रता और सुंदरता एक ऐसी चीज़ है जो अगर आपके भीतर वाकई में है तो आप चाहकर भी उसे छोड़ नहीं पाएंगे। एक विनम्र व्यक्ति लाखों हथियार धारकों पर भी हावी होता है। हम संसार में जितनी अच्छाई बांटेंगे, उतनी ही वह हमें लौटकर वापस मिलेंगी। और विनम्र व्यक्ति कभी भी बदलने के फायदे के स्वार्थ से अच्छा ही नहीं करता, विनम्र होने की सबसे अद्भुत विशेषता यही है कि विनम्र व्यक्ति सदैव निस्वार्थ भाव से कार्य करता है क्योंकि वह अपने कर्मों सिंह सकारात्मकता फैलाना चाहता है। विनम्र व्यक्ति स्वभाव के सरल एवं शांत होते हैं क्योंकि उनके मन में छल कपट नहीं होता तथा भी नकारात्मकता से कोसों दूर रहते हैं। आज के समय में यदि आपका चरित्र सुंदर है, आपमें आंतरिक सुंदरता है, आप विनम्र हैं, तो आपके पास संसार की सबसे बड़ी दौलत है, क्योंकि चरित्र निर्माण पैसे से नहीं हो सकता। विनम्रता हमारे भीतर प्राकृतिक रूप से आती है। इसलिए विनम्र बनिए, जीवन के असली रूप को जानिए।

महादेवी वर्मा

कौतुकी उपाध्याय
बी.ए.प्रथम वर्ष

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को फ़र्रुखाबाद (आगरा) में हुआ। वे हिंदी भाषा की कवियत्री थी और उन्हें हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता है। आधुनिक हिंदी की सबसे सशक्त कवित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने उन्हें हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती भी कहा है। महादेवी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अंधकार को दूर करने वाली दृष्टि देने को कोशिश की। न केवल उनका काव्य ही बल्कि उनके समाज सुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे।

महादेवी जी के गीतिकाव्य का संकलन एवं चयन

संभव है जिस प्रकार प्रभात की सुनहली रश्मि धोकर चिड़िया आनंद में चहचहाते उठती हैं और मेघको घुमड़ता घिरता देख कर मयूर नाच उठता है उसी प्रकार मनुष्य ने भी पहले-पहले अपने भावों का प्रकाशन ध्वनि और गति द्वारा ही किया । विशेषकर स्वर सामंजस्य में बंधा हुआ गेय काव्य मानव हृदय के कितना निकट है।यह उद्घात-अनुदात्त स्वरों में बंधे वेदना गीत तथा अपनी मधुरता के कारण प्राणों में समा जाने वाले प्राकृत पदों के अधिकारी हम भली भांति समझ सकते हैं। अपने काव्य संग्रह यामा को महादेवी जी ने चार भागों में बांटा है - प्रथम भाग:नीहार, द्वितीय भाग-रश्मि, तृतीय भाग –नीरजा और चतुर्थ भाग- सांध्यगीत। महादेवी जी के काव्य संग्रह दीप शिखा में कुल 52 रचनाएं हैं जिनमें से चार रचनाएं नृत्य बद्धता हेतु उपयुक्त है। जिनमें से एक है 'गूंजती क्यों प्राण वंशी?'

शून्यता तेरे हृदय की
आज किसकी सांस भरती?
व्यास को वरदान करती,
स्वर लहरियों में बिखरती
आज मूक अभाव किसने कर दिया लयवान वंशी?
अमिट मसि के अंक से
सोने कभी थे छिद्र तेरे,
पुलक के अब हैं बसेरे
मुखक रंगों के चितेरे,
आज ली इनका व्यवस्था किन उंगलियों ने जान वंशी?
मृणमयी तू रच रही यह
तरल विद्युत!-ज्वार सा क्या?
चांदनी घन सार-सा क्या?
दीनों के हार-सा क्या?
स्वप्न क्यों अवरोही में,आरोह में दुखगान वंशी
गूंजती क्यों प्राणवंशी?

महादेवी जी द्वारा व्यक्त रहस्यानुभूति को आलोचकों ने सदैव सराहा है। छायावादी युग की गीति काव्यधारा में महादेवी जी ने भी काव्य प्रवाह को जोड़ा है। महादेवी जी के काव्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनका प्रेम लौकिक न होकर अलौकिक है।

गूंजती वचों प्राण वंशी यह कविता महादेवी जी के काव्य संग्रह दीपशिखा (पृष्ठ.96) से ली है। स्पीक कविता का स्थायी भाव 'विस्मय' है। जो अद्भुत रस की सृष्टि करता है। साथ ही 'रति' स्थायी भाव का भी समावेश है जिससे सौंदर्य/श्रृंगाररस भी सृजित हो रहा है। इस जातिनुसार वर्णित नायिका भेद की नायिका 'पद्मिनी' को मनोभाव, उसका रूप सौंदर्य अर्थात उसके वाह्य और आंतरिक सौंदर्य है का सामांजस्य इस गीत को नित्य रूप से प्रस्तुत करने वाले कलाकार के पास होना चाहिए।

समय बहुत ही मूल्यवान है

रोहित कुमार प्रियदर्शी
बी.ए.प्रथम वर्ष

चला गया जो समय लौट कर, कभी नहीं फिर आता,
सदा समय को खोने वाला, कर मल-मल कर पछताता।
जिसने इसे न माना इसको, जिसने भी ठुकराया
लाख यत्न करने पर भी. हाथ न उसके आया।।
हो जाता है एक घड़ी के लिए जन्म भर रोना
समय वहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना।।
धन खो जाता श्रम करने से, फिर मनुष्य है पाता
स्वास्थ विगड़ जाने पर, उपचारों से है बन जाता।
विद्या खो जाती फिर भी, पढ़ने से आ जाती
लेकिन खो जाने से मिलती, नहीं समय की जाती।
जीवन भर भटकों, छानो, दुनिया का कोना कोना
समय वहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना।।
रहती थी वापू की कटि में, हरदम घड़ी लटकती
उन्हें एक क्षण की वरवादी, थी अत्यधिक खटकती।
वच्चो तुम भी उसी भांति, पल-पल से लाभ उठाओ,
व्यर्थ न जाएं कभी एक क्षण, ऐसा नियम बनाओ।
गांठ वांध लो, नहीं पड़ेगा कभी तुम्हे दुःख ढोना
समय वहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी गत खोना।।

देश की बोली

निहारिका जाटव
बी.ए. प्रथम वर्ष

राष्ट्र देश की बोली हमारी, हमको मार्ग दिखाती है।
सही गलत का पाठ-पढ़ाकर, हम को आगे बढ़ाती है।
हम लोगों की बोली मानो, जैसे दिया हुआ वरदान है।
अगर देश की पहचान को, हम को आगे बढ़ाना है,
हिंदी मातृभाषा का संकल्प, हम सब को उठाना है।
जहाँ देखो वहाँ अंग्रेजी का विकास है, कहाँ गयी वो
बोली हमारी जहाँ हिंदी का उपचार है।
हिंदी हमारी रग-रग मेंजीने की आग है,
हाथ लगाकर देखो जैसे दिल में उठा तूफान है।
हम देश के नागरिक हैं हमे साथ दिखना है।
अपनी मातृभाषा को आगे हमें लाना है।
हिन्द से बना है हिंदुस्तान यह हिंदुस्तान हमारा है।
हिंदी भाषा बोलना हम सबका यह अभिमान है।
देश की बोली हमारी, हमको मार्ग दिखाती है।
सही-गलत का पाठ पढ़ाकर, हमको आगे बढ़ाती है।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

सौम्या पेटल
बी.ए.दिव्तीय वर्ष

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा के कटक क्षेत्र में हुआ था। उनके पिता जानकी नाथ बोस कटक के एक मशहूर सरकारी वकील थे। नेता जी वी.ए. की परीक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय से दे कर प्रथम श्रेणी प्राप्त किए। नेताजी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वीर क्रांतिकारी नायकों में से एक थे। और उनके जन्मदिवस 23 जनवरी को पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है। वह एक

क्रांतिकारी नेता थे। उनका एकमात्र लक्ष्य था-भारत को आजाद कराना। नेताजी स्वामी विवेकानंद को अपना आध्यात्मिक गुरु मानते थे। जबकि चितरंजन दास उनके राजनीतिक गुरु थे। नेताजी क्रांतिकारी आंदोलन से संबंधित होने के कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा था। 1930 के दशक के मध्य में उन्होंने यूरोप की यात्रा की और (द इंडियन स्ट्रगल) नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने वर्ष 1920-1934 के बीच होने वाले देश के सभी स्वतंत्रता आंदोलनों को कवर किया था। नेता जी ने 1938 में राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ने के लिए उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिंद फौज का गठन किया। 3 मई 1939 को नेता जी ने कांग्रेस के अंदर ही फॉरवर्ड ब्लॉक के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की। उनके द्वारा दिया गया जय हिन्द का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बना। और तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा का नारा भी नेता जी द्वारा दिया गया था। नेता जी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने सुप्रीम कमांडर जनरल के रूप में सेना को संबोधित करते हुए दिल्ली चलो का नारा दिया। उन्होंने लगभग 40000 भारतीयों के साथ आजाद हिंद फौज बनाई। साथ ही साथ आजाद हिंद सरकार और बैंक की भी स्थापना की और देश के बाहर हिंदुस्तान की आजादी के लिए अन्य देशों का समर्थन हासिल किया। 21 अक्तूबर 1943 को सिंगापुर में नेता जी ने स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार की घोषणा की थी। नेताजी द्वारा 23 अक्टूबर 1943 को 300 महिलाओं को लेकर रानी झांसी रेजिमेंट का गठन किया। मार्च 1944 तक में उनकी संख्या 1000 हो गई थी। नेता जी ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ने के लिए जापान के सहयोग से आजाद हिंद फौज का गठन किया, जो 1944 तक बढ़ कर 85,000 तक हो गई थी। द्वितीय विश्व युद्ध के समय 4 अप्रैल 1944 से 22 जून 1944 तक ब्रिटानी भारत सेना तथा जापान की संयुक्त सेना के बीच कोहिमा के आसपास भयंकर युद्ध लड़ा गया था। यहयुद्ध तीन चरणों में लड़ा गया था। यह युद्ध ब्रिटिश सेना से जुड़ी अब तक की सबसे बड़ी लड़ाई घोषित हुआ । इस युद्ध में जापानी सेना को पीछे हटना पड़ा था एवं आजाद हिंद फौज ने उत्तर-पूर्व में आकर पहली बार अंग्रेजों से अपनी जमीन छीनकर 19 मार्च 1945 को तिरंगा फहराया था। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की टोक्यो के लिए जाते समय ताइवान में 18 अगस्त 1945 को विमान दुर्घटना होने के कारण मृत्यु हो गई। नेता जी को मरणोपरांत 1992 में भारत रत्न पुरस्कार दिया गया था। उन्होंने देश की आजादी के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपने जीवन का बलिदान दे दिया। ऐसी महान आत्मा को हम सभी भारतीयों की तरफ से शत-शत नमन।

शिक्षक

शिवांशु अहिरवार
बी.ए. प्रथम वर्ष

जीवन में जो राह दिखाए
सही तरह चलना सिखाए,
माता-पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।
सबको मान प्रतिष्ठा मिली जिनसे,
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिनसे।
कभी रहा ना मैं दूर जिनसे,
वह मेरा पथ प्रदर्शक है
मेरे मन को भाता,
वह मेरा शिक्षक कहलाता।
कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में बड़ा गंभीर,
मन में दबी रहे यह इच्छा
काश मैं उन जैसा बन पाता
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

योग्यता का पैमाना

विक्रांत सिंह धुर्वे
बी.ए. प्रथम वर्ष

एक वादशाह को अपने लिए एक निजी सेवक की आवश्यकता थी। उसने ऐलान करा दिया कि जो भी स्वयं को इस पद के योग्य समझे, वह निश्चित दिन साक्षात्कार के लिए उपस्थित हो जाये। तीन युवक तय समय और स्थान पर पहुँच गए। बादशाह ने पहले युवक से पूछा, 'अगर हम दोनों की दाढी में आग लग जाये तो तुम क्या करोगे'। युवक बोला, 'जी, पहले आप की दाढी की आग बुझाऊंगा फिर अपनी'। दूसरे से भी यही

सवाल पूछा गया तो वहसं भलकर बोला –'जी पहले अपनी आग बुझाऊंगा फिर आपकी।'

आप तीसरे की बारी थी। वह गंभीरता से कहने लगा,'हुजूर कभी ऐसी नौबत आ गई तो एक हाथ से आपकी आग बुझाऊंगा दूसरे हाथ से अपनी'। बादशाह उसके जवाब से प्रसन्न होकर बोले,' तुम इस पद पर नियुक्त किए जाते हो'। फिर सबको सुनाते हुए कहने लगे, "जो स्वयं को छोड़कर दूसरे का भला करें, वह अव्यावहारिक है। जो स्वार्थ को ही सर्वोपरि समझे, वह अधर्मी है और जो अपनी और दूसरों की भलाई समान रूप से करे, वह ही वास्तव में सज्जन है। तीसरे युवक में ये सब गुण हैं, अतः उसे सेवा में लिया जाता है।

हमेशा सीखते रहें

विशाल सिंह धुर्वे
बी.ए.प्रथमवर्ष

एक बार गांव के दो व्यक्तियों ने शहर जाकर पैसे कमाने का निर्णय लिया। शहर जाकर कुछ महीने इधर-उधर छोटा-मोटा काम कर दोनों व्यक्तियों ने कुछ पैसा जमा किया। फिर उन पैसों से अपना-अपना व्यवसाय प्रारंभ किया। दोनों व्यक्तियों का व्यवसाय चल पड़ा। दो साल पहले ही दोनों ने अच्छी खासी तरक्की कर ली। व्यवसाय को फलता-फूलता देख पहले व्यक्ति ने सोचा कि अब तो मेरा काम चल पड़ा है। अब तो मैं तरक्की की सीढ़ियों पर चढ़ता चला जाऊंगा। लेकिन उसकी सोच के विपरीत व्यापारिक उतार-चढ़ाव के कारण उसे उस साल अत्यधिक घाटा हुआ। अब तक आसमान में उड़ रहा वह व्यक्ति यथार्थ के धरातल पर आ गिरा। वह उन कारणों को तलाशने लगा, जिनकी वजह से उसका व्यापार बाजार की मार नहीं सह पाया। सबसे पहले उसने उस दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की स्थिति का पता लगाया। जिसने उसके साथ ही व्यापार आरंभ किया था। वह यह जानकर हैरान रह गया कि इस उतार-चढ़ाव और मंदी के दौर में भी उसका व्यवसाय मुनाफ़े में है। उसने तुरंत उसके पास जाकर इसका कारण जानने का निर्णय लिया। अगले ही दिन वह दूसरे व्यक्ति के पास पहुंचा। दूसरे व्यक्ति ने उसका खूब आदर-सत्कार किया और उसके आने का कारण पूछा, तब पहला व्यक्ति बोला, दोस्त! इस वर्ष मेरा व्यवसाय बाजार की मार नहीं झेल पाया। बहुत घाटा झेलना पड़ा, तुम भी तो इसी व्यवसाय में हो। तुमने ऐसा क्या किया कि इस उतार-चढ़ाव के दौर में भी तुमने मुनाफा कमाया? यह बात सुन दूसरा व्यक्ति बोला,

"भाई! मैं तो बस सीखता जा रहा हूँ, अपनी गलती से भी और साथ ही दूसरों की गलतियों से भी। जो समस्याएं सामने आती है उससे भी सीख लेता हूँ। इसलिए जब दोबारा वही समस्या सामने आती है तो उसका सामना अच्छे से कर पाता हूँ और उसके कारण मुझे नुकसान नहीं उठाना पड़ता। बस सीखने की प्रवृति ही है, जो मुझे जीवन में आगे बढ़ाती जा रही है। दूसरे व्यक्ति की बात सुनकर पहले व्यक्ति को अपनी भूल का अहसास हुआ। सफलता के मद में वह अति-आत्मविश्वास से भर उठा था और सीखना छोड़ दिया था। वह यह प्रण कर वापस लौट आया कि कभी सीखना नहीं छोड़ूँगा। उसके बाद उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और तरक्की की सीढ़ियां चढ़ता चला गया।

हिन्दी साहित्य सभा

प्रेमचंद जयंती

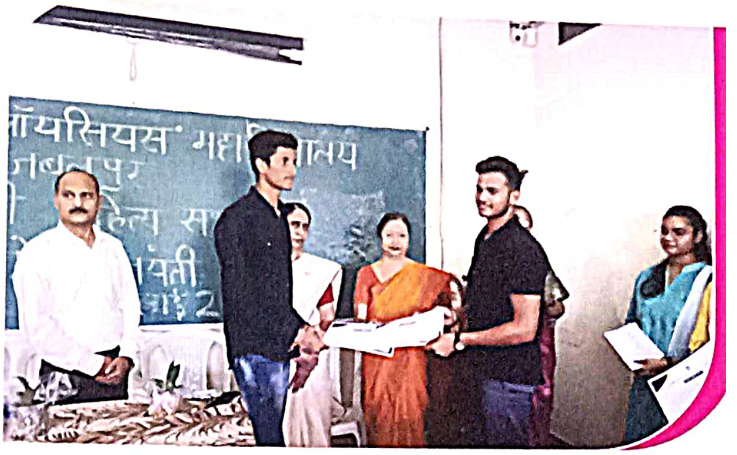

हिन्दी पखवाड़ा/हिन्दी दिवस

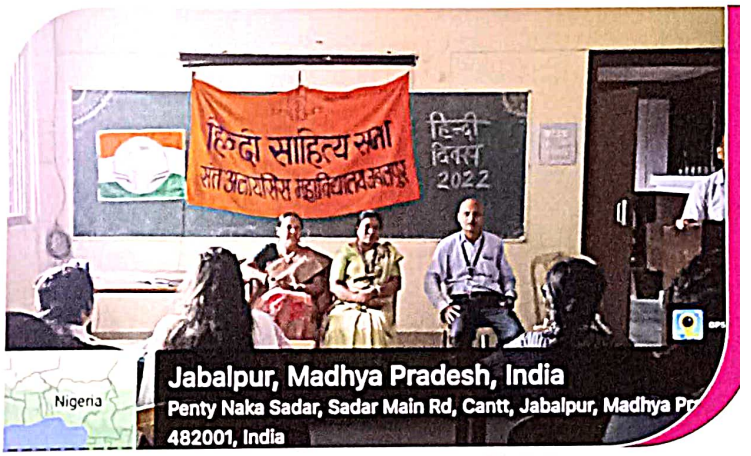

भारतीय भाषा उत्सव

विश्व हिंदी दिवस

संत रविदास जंयती

पोस्टर प्रतियोगिता